हिंदी साहित्य चैनल
प्रस्तुति • संस्करण 2026-27

ई-बुक
PDF नोट्स

नए पाठ्यक्रम पर आधारित

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग (UPESSC)

UP TGT

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (TGT) • विषय कोड 01

हिंदी

संपूर्ण कोर्स • संक्षिप्त नोट्स

- ★ नए सिलेबस के सभी 6 भाग, एक ही ई-बुक में
- ★ साहित्य का इतिहास, गद्य विधाएँ, भाषा और व्याकरण
- ★ रस, छंद, अलंकार : उदाहरण और व्याख्या सहित
- ★ संस्कृत साहित्य और संस्कृत व्याकरण
- ★ तालिकाएँ, मतभेद, परीक्षा-बिंदु और त्वरित रिवीजन



+ 100 प्रश्नों का मॉक टेस्ट
(उत्तर और व्याख्या सहित)

केवल कृष्ण घोड़ेला
एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता

store.hindisahity.com
WhatsApp : 9680260474



लेखक परिचय
केवल कृष्ण घोड़ेला
एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी) · कॉलेज व्याख्याता · श्रीगंगानगर (राजस्थान)
हिंदी साहित्य चैनल के संचालक। UGC NET/JRF, SET, TGT, PGT, RPSC आदि परीक्षाओं के लिए वर्षों से हिंदी पढ़ा रहे हैं।
hindisahity.com store.hindisahity.com
YouTube : Hindi Sahitya Channel Telegram

© सर्वाधिकार सुरक्षित (All Rights Reserved)

लेखक एवं संकलनकर्ता : केवल कृष्ण घोड़ेला **प्रस्तुति एवं प्रकाशन :** हिंदी साहित्य चैनल, श्रीगंगानगर **संस्करण :** 2026-27

यह ई-बुक केवल कृष्ण घोड़ेला द्वारा तैयार की गई है और हिंदी साहित्य चैनल (store.hindisahity.com) द्वारा प्रकाशित है। इसकी विषय-वस्तु, प्रस्तुति, तालिकाएँ, बॉक्स और प्रश्न लेखक की बौद्धिक संपदा हैं, जो प्रतिलिप्यधिकार अधिनियम, 1957 के अंतर्गत सुरक्षित हैं।

यह PDF केवल ख़रीदार के व्यक्तिगत अध्ययन के लिए है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसे या इसके किसी अंश को कॉपी, प्रिंट या फ़ोटोकॉपी करके बेचना या बाँटना; WhatsApp, Telegram, Facebook आदि किसी ग्रुप या चैनल में साझा करना; किसी वेबसाइट, ऐप, YouTube वीडियो या कोचिंग सामग्री में उपयोग करना **पूर्णतः वर्जित है**। ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

अस्वीकरण : पुस्तक तैयार करने में पूरी सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए लेखक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। परीक्षा से जुड़ी आधिकारिक जानकारी के लिए संबंधित आयोग की अधिसूचना देखें। कोई त्रुटि मिले तो WhatsApp 9680260474 पर बताएँ, अगले संस्करण में सुधार किया जाएगा।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

इस ई-बुक का उपयोग कैसे करें

- भाग 1 से भाग 6 तक UPESSC के आधिकारिक TGT हिंदी पाठ्यक्रम के क्रम में पढ़ें; हर भाग के पहले पृष्ठ पर उस भाग का सिलेबस और "इस भाग में" सूची दी गई है।
- "परीक्षा-बिंदु", "ध्यान रखें", "मतभेद" और "याद-ट्रिक" वाले बॉक्स परीक्षा से पहले बार-बार दोहराइए।
- पूरा पाठ्यक्रम पढ़ने के बाद अंत में दिया गया 100 प्रश्नों का मॉक टेस्ट हल कीजिए और उत्तरमाला से मिलाइए।
- सूचकांक में किसी भी भाग या अध्याय पर क्लिक करके सीधे उस पृष्ठ पर पहुँचिए।

इस पुस्तक में क्या-क्या है

- भाग 1 : हिंदी साहित्य का इतिहास — आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल (काव्य)
- भाग 2 : हिंदी गद्य साहित्य का विकास — कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना, लघु विधाएँ, गद्यकाव्य, व्यंग्य
- भाग 3 : काव्य के भेद — काव्य-लक्षण, रस, छंद, अलंकार, काव्यगुण, काव्यदोष
- भाग 4 : भाषा — आर्यभाषा से हिंदी तक, बोलियाँ, ध्वनियाँ, शब्द-संपदा, संवैधानिक स्थिति, देवनागरी लिपि
- भाग 5 : व्याकरण — वर्ण, वर्तनी, संधि, समास, संज्ञा से अव्यय तक, वाक्य-शुद्धि, शब्द-भंडार, मुहावरे-लोकोक्तियाँ
- भाग 6 : संस्कृत साहित्य — प्रमुख रचनाकार, संधि, समास, शब्दरूप, धातुरूप, कारक, अनुवाद
- मॉक टेस्ट : 100 प्रश्न (उत्तर और व्याख्या सहित)

आपकी परीक्षा के अनुसार कस्टम नोट्स — ऑर्डर पर तैयार

हमारी टीम RPSC, TGT, PGT, UPSC, NET/JRF सहित किसी भी परीक्षा के लिए आपके पाठ्यक्रम के अनुसार विशेष नोट्स ऑर्डर पर तैयार करती है (सशुल्क सेवा)।

WhatsApp : 9680260474

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

📖 सूचकांक (विषय-सूची)

भाग 1 : हिंदी साहित्य का इतिहास 7

(क) आदिकाल 8

अध्याय 1 : हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की पद्धतियाँ 8
अध्याय 2 : हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास-ग्रंथ 8
अध्याय 3 : काल-विभाजन और आदिकाल का नामकरण 12
अध्याय 4 : आदिकाल की पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियाँ 14
अध्याय 5 : सिद्ध साहित्य (बौद्ध साहित्य) 15
अध्याय 6 : नाथ साहित्य 17
अध्याय 7 : रासो साहित्य 19
अध्याय 8 : जैन साहित्य 23
अध्याय 9 : आदिकालीन लौकिक साहित्य 25
अध्याय 10 : अमीर खुसरो 26
अध्याय 11 : विद्यापति 27
अध्याय 12 : प्रमुख काव्य-पंक्तियाँ (पंक्ति → कवि → रचना) 29
अध्याय 13 : त्वरित स्मरण सारणी 30
अध्याय 14 : अतिरिक्त परीक्षाउपयोगी सामग्री 31

(ख) भक्तिकाल 35

अध्याय 1 : भक्ति आंदोलन — पृष्ठभूमि और स्वरूप 35
अध्याय 2 : निर्गुण भक्ति काव्यधारा — ज्ञानमार्गी संत काव्य 38
अध्याय 3 : निर्गुण प्रेमाश्रयी (सूफ़ी) काव्यधारा 43
अध्याय 4 : सगुण कृष्णभक्ति काव्यधारा (कृष्णाश्रयी शाखा) 47
अध्याय 5 : सगुण रामभक्ति काव्यधारा (रामाश्रयी शाखा) 53
अध्याय 6 : संप्रदाय-मुक्त भक्त और नीति कवि — रसखान, मीराँबाई, रहीम 57
अध्याय 7 : भक्तिकाल की प्रमुख काव्य-पंक्तियाँ (पंक्ति → कवि) 59
अध्याय 8 : भक्तिकाल की चर्चित रचनाएँ — कालक्रमानुसार तालिका 63
अध्याय 9 : तुलनात्मक सारणी और त्वरित स्मरण 65
अध्याय 10 : अतिरिक्त परीक्षाउपयोगी सामग्री 66

(ग) रीतिकाल 69

अध्याय 1 : रीतिकाल — परिचय, नामकरण, आरंभ और पृष्ठभूमि 69
अध्याय 2 : रीतिकाल का वर्गीकरण और प्रवृत्तियाँ 71
अध्याय 3 : रीतिबद्ध कवि (आचार्य कवि) 73
अध्याय 4 : रीतिसिद्ध कवि 79
अध्याय 5 : रीतिमुक्त कवि और अन्य रीतिकालीन कवि 82
अध्याय 6 : परीक्षाउपयोगी काव्य-पंक्तियाँ, कालक्रम तालिका और त्वरित स्मरण 86
अध्याय 7 : अतिरिक्त परीक्षाउपयोगी सामग्री — मतभेद, वर्गीकरण, विषयानुसार ग्रंथ और कवि-विशेष 92

(घ) आधुनिक काल (काव्य) 103

1. आधुनिक काल : परिचय, नामकरण और काल-विभाजन 103
2. भारतेन्दु युग (1850–1900 ई.) 105
3. द्विवेदी युग (1900–1920 ई.) 109
4. छायावाद (1918–1936 ई.) 114
5. प्रगतिवाद (1936–1943 ई.) 122
6. प्रयोगवाद (1943–1953 ई.) 125
7. नयी कविता और उसके बाद की धाराएँ 129
8. कालक्रम, पंक्ति→कवि और त्वरित स्मरण 133
9. अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण तथ्य 136

भाग 2 : हिंदी गद्य साहित्य का विकास 138

1. हिंदी गद्य का उद्भव और विधाओं का मानचित्र 139
2. हिंदी कहानी का विकास 140

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

3. हिंदी नाटक का विकास....153
4. हिंदी उपन्यास का विकास....164
5. एकांकी का विकास....179
6. हिंदी निबंध का विकास....182
7. हिंदी आत्मकथा का विकास....188
8. हिंदी जीवनी का विकास....192
9. रेखाचित्र और संस्मरण....194
10. डायरी, रिपोर्ताज और यात्रा-वृत्त....197
11. हिंदी आलोचना का विकास....201
12. गद्यकाव्य (गद्यगीत) का विकास....204
13. हिंदी व्यंग्य का विकास....205

भाग 3 : काव्य के भेद....207
1. काव्य : लक्षण और भेद....208
2. रस....210
3. छंद....216
4. अलंकार....220
5. काव्यगुण....227
6. काव्यदोष....229
7. त्वरित स्मरण सारणी....230

भाग 4 : भाषा....232
1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (आर्यभाषा से हिंदी तक)....233
2. भौगोलिक विस्तार : उपभाषाएँ और बोलियाँ....237
3. हिंदी का भाषिक स्वरूप : ध्वनियाँ, शब्द-संपदा, रूप और वाक्य....239
4. प्रयोग के विविध रूप और संवैधानिक स्थिति....241
5. देवनागरी लिपि : विकास, विशेषताएँ, मानकीकरण, दोष और सुधार....244
6. अंतिम रिवीजन : 25 तथ्य एक नज़र में....246

भाग 5 : व्याकरण....248

खंड 1 : ध्वनि और वर्ण....249
अध्याय 1 : वर्ण-विचार....249
अध्याय 2 : वर्तनी....256
अध्याय 3 : संधि....260

खंड 2 : शब्द-विचार....267
अध्याय 4 : शब्द-विचार (शब्द-भेद)....267
अध्याय 5 : उपसर्ग....276
अध्याय 6 : प्रत्यय....281
अध्याय 7 : समास....288

खंड 3 : पद-विचार (संज्ञा से विशेषण तक)....297
अध्याय 8 : संज्ञा....297
अध्याय 9 : लिंग....302
अध्याय 10 : वचन....310
अध्याय 11 : कारक....315
अध्याय 12 : सर्वनाम....320
अध्याय 13 : विशेषण....325

खंड 4 : पद-विचार (क्रिया से अव्यय तक)....332
अध्याय 14 : क्रिया....332
अध्याय 15 : काल....338
अध्याय 16 : वाच्य और प्रयोग....343
अध्याय 17 : अव्यय (अविकारी शब्द)....348

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

खंड 5 : वाक्य-विचार 354
अध्याय 18 : वाक्य और उसके भेद 354
अध्याय 19 : उपवाक्य और पदबंध 356
अध्याय 20 : पद-परिचय और वाक्य-विश्लेषण 358
अध्याय 21 : विराम-चिह्न 361
अध्याय 22 : वाक्य-शुद्धि 363
अध्याय 23 : शब्द-शुद्धि (वर्तनी-शुद्धि) 367

खंड 6 : शब्द-भंडार 373
अध्याय 24 : पर्यायवाची शब्द 373
अध्याय 25 : विलोम शब्द 376
अध्याय 26 : अनेकार्थी शब्द 379
अध्याय 27 : श्रुतिसम (समोच्चरित) भिन्नार्थक शब्द 381
अध्याय 28 : अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 384
अध्याय 29 : मुहावरे 387
अध्याय 30 : लोकोक्तियाँ (कहावतें) 391

भाग 6 : संस्कृत साहित्य 395
1. संस्कृत साहित्य : एक परिचय 396
2. संस्कृत के प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ 396
3. संधि 398
4. समास 399
5. शब्दरूप 400
6. धातुरूप 402
7. कारक और उपपद विभक्ति 404
8. अनुवाद (हिंदी से संस्कृत) 405
9. त्वरित स्मरण सारणी 405

मॉक टेस्ट : 100 प्रश्न (UP TGT हिंदी) 406
प्रश्न-पत्र 406
उत्तरमाला 424
व्याख्या सहित उत्तर 424

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 1
हिंदी साहित्य का इतिहास

UPESSC का आधिकारिक पाठ्यक्रम (TGT हिंदी)

आदिकाल, भक्तिकाल (सन्त काव्य, सूफ़ी काव्य, राम काव्य, कृष्ण काव्य), रीतिकाल, आधुनिक काल, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता।

इस भाग में

- (क) आदिकाल : 14 अध्याय
- (ख) भक्तिकाल : 10 अध्याय
- (ग) रीतिकाल : 7 अध्याय
- (घ) आधुनिक काल (काव्य) : 9 अध्याय

नोट : आधुनिक काल का गद्य (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि) भाग 2 में दिया गया है।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 1 (क) आदिकाल

अध्याय 1 : हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की पद्धतियाँ

साहित्य का इतिहास लिखने के कई तरीके हैं। परीक्षा में पूछा जाता है कि कौन-सी पद्धति किसने अपनाई।

1. वर्णानुक्रम पद्धति

- कवियों और लेखकों का परिचय उनके नाम के पहले अक्षर (अ, आ, क, ख...) के क्रम में दिया जाता है।
- समय का ध्यान नहीं रखा जाता। उदाहरण : कबीर (भक्तिकाल) और केशव (रीतिकाल) दोनों का नाम 'क' से शुरू होता है, इसलिए दोनों साथ-साथ आ जाते हैं, जबकि उनके काल अलग हैं।
- **प्रयोग** : गार्सा द तासी और शिवसिंह सेंगर।
- **दोष** : साहित्य का विकास-क्रम नहीं दिखता, इसलिए इतिहास की दृष्टि से इसे कमज़ोर माना जाता है।

2. कालानुक्रमी पद्धति

- कवियों को उनके जन्म-वर्ष या रचना-काल के क्रम में रखा जाता है।
- **प्रयोग** : जॉर्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु।
- **लाभ** : समय के साथ साहित्य में आया बदलाव दिखता है। **कमी** : केवल तिथि-क्रम से प्रवृत्तियाँ स्पष्ट नहीं होतीं।

3. वैज्ञानिक पद्धति

- इतिहासकार पूरी तरह तटस्थ रहकर तथ्य इकट्ठे करता है और उन्हें क्रम से रखता है।
- इसमें **क्रमबद्धता** और **तथ्यों की पुष्टि (प्रमाण)** अनिवार्य हैं।
- **दोष** : साहित्य का इतिहास केवल तथ्यों की सूची नहीं होता। उसमें व्याख्या और विश्लेषण भी चाहिए, जो इस पद्धति में कम रहता है।

4. विधेयवादी पद्धति (सबसे महत्त्वपूर्ण)

- **जनक** : फ्रांसीसी विचारक **तेन (Taine)**।
- तेन के अनुसार साहित्य को तीन बातों से समझा जाता है : **जाति, वातावरण, क्षण**।
- हिंदी में इस पद्धति को सुव्यवस्थित रूप से अपनाने वाले **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** हैं।
- शुक्ल जी की मान्यता : "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।" जब जनता की चित्तवृत्ति बदलती है, तब साहित्य की प्रवृत्ति भी बदलती है। इसी को वे काल-विभाजन का आधार बनाते हैं।
- **मतभेद** : नलिन विलोचन शर्मा के अनुसार हिंदी में विधेयवादी दृष्टि के आदि प्रवर्तक शुक्ल जी नहीं, **ग्रियर्सन** हैं।

इतिहास-लेखन का आरंभ

- हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन का वास्तविक आरंभ **19वीं शताब्दी** से माना जाता है।
- इससे पहले की रचनाएँ — चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता और नाभादास का भक्तमाल — भक्तों/कवियों की जानकारी तो देती हैं, पर कालक्रम से साहित्य का विकास नहीं दिखातीं। इसलिए इन्हें इतिहास-ग्रंथ नहीं माना जाता।
- पहला प्रयास एक फ्रांसीसी विद्वान **गार्सा द तासी** ने किया।

अध्याय 2 : हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास-ग्रंथ

2.1 गार्सा द तासी (फ्रांसीसी विद्वान)

- **ग्रंथ** : इस्त्वार द ला लितेरेत्यूर ऐन्दुई ए ऐन्दुस्तानी (हिंदुई और हिंदुस्तानी साहित्य का इतिहास)।
- **भाषा** : मूल रूप से **फ्रेंच**।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

- **प्रकाशन** : प्रथम संस्करण (2 भाग) — भाग 1 : 1839 ई., भाग 2 : 1847 ई.। द्वितीय संस्करण (3 भाग) — 1870–71 ई.। प्रकाशक : ओरिएंटल ट्रांसलेशन कमेटी।
- **विशेषताएँ**
- **महत्त्व** : किसी विदेशी विद्वान द्वारा हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने का पहला प्रयास। इससे भारतीय विद्वानों को प्रेरणा मिली।
- **कमियाँ** : (1) काल-विभाजन नहीं; (2) कवि कालक्रम की जगह अकारादि क्रम से रखे गए; (3) युग की प्रवृत्तियों का विवेचन नहीं।
- **परीक्षा-बिंदु** : इन कमियों के कारण शुक्ल जी इसे इतिहास नहीं, केवल **'वृत्त संग्रह'** कहते हैं।

2.2 ठाकुर शिवसिंह सेंगर

- **ग्रंथ** : शिवसिंह सरोज (हिंदी भाषा में लिखा पहला साहित्येतिहास; किसी भारतीय विद्वान का पहला प्रयास)।
- **प्रकाशन** : पहले 1878 ई. में छपा; कमियाँ रह जाने पर संशोधन के बाद 1883 ई. में दोबारा छपा। प्रकाशक : नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ।
- **विशेषताएँ**
- **महत्त्व** : उस समय उपलब्ध हिंदी काव्य-संबंधी जानकारी एक जगह जुटाई गई, जिससे आगे के इतिहासकारों (विशेषतः ग्रियर्सन) को आसानी हुई।
- **कमियाँ** : काल-विभाजन नहीं; कवि कालक्रम से नहीं; घटनाओं का संकलन मनमाने ढंग से।
- शुक्ल जी इसे भी **'वृत्त संग्रह'** मात्र कहते हैं।
- **परीक्षा-बिंदु** : सेंगर ने हिंदी की प्रारंभिक सीमा वि.सं. 770 तक ली और कवि **पुष्य (पुण्ड)** को हिंदी का पहला कवि माना।

2.3 जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (अंग्रेज़ विद्वान)

- **ग्रंथ** : द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ नॉर्दर्न हिंदुस्तान।
- **प्रकाशन** : 1888 ई. में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में; स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 1889 ई. में।
- **भाषा** : मूलतः **अंग्रेज़ी**।
- डॉ. किशोरीलाल गुप्त ने इसका हिंदी अनुवाद हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास नाम से 1957 ई. में किया (हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी)। डॉ. गुप्त के अनुसार सही अर्थों में हिंदी साहित्य का **पहला इतिहास** यही है।
- **विशेषताएँ**
- **प्रथम काल-विभाजन** : हिंदी साहित्य के इतिहास में पहली बार कवियों को कालखंडों में बाँटकर प्रस्तुत किया गया।
- **कवि-संख्या** : कुल 952 कवि (886 + 66 नए)।
- **भक्तिकाल** : भक्तिकाल को 'स्वर्णकाल' कहने वाले पहले इतिहासकार।
- **ग्रियर्सन का काल-विभाजन**

क्र.	कालखंड
1	चारण काल (700 ई. से 1300 ई.)
2	15वीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जागरण
3	जायसी की प्रेम-कविता
4	ब्रज का कृष्ण-संप्रदाय
5	मुग़ल दरबार
6	तुलसीदास
7	रीति-काव्य
8	तुलसीदास के अन्य परवर्ती (अनुयायी)
9	18वीं शताब्दी

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

क्र.	कालखंड
10	कंपनी के शासन में हिंदुस्तान
11	महारानी विक्टोरिया के शासन में हिंदुस्तान

- **इस विभाजन की कमियाँ** : यह पूरी तरह वैज्ञानिक नहीं है; चारण काल के तुरंत बाद 15वीं शताब्दी आ जाती है और 14वीं शताब्दी का उल्लेख ही नहीं; नामकरण का आधार हर जगह एक-सा नहीं है।
- **आधार-ग्रंथ** : इस्त्वार द ला लितेरेत्यूर... (तासी), शिवसिंह सरोज, भक्तमाल (नाभादास), गोसाईं चरित (बाबा बेनीमाधवदास), कालिदास हजारा (कालिदास त्रिवेदी), काव्य-संग्रह (पं. महेशदत्त), शृंगार संग्रह (सरदार कवि), सुंदरी तिलक (हरिश्चंद्र), विचित्रोपदेश (कक्कछेदी तिवारी), राग कल्पद्रुम (कृष्णानंद व्यास)।
- **परीक्षा-बिंदु** : हिंदी साहित्य का काल-विभाजन सबसे पहले ग्रियर्सन ने किया। उनके विभाजन में कुल 11 कालखंड हैं। उन्होंने आदिकाल को 'चारण काल' कहा और भक्तिकाल को 'स्वर्णकाल' कहने वाले पहले इतिहासकार वे ही माने जाते हैं।

2.4 मिश्रबंधु (गणेशबिहारी, श्यामबिहारी और शुकदेवबिहारी मिश्र)

- **ग्रंथ** : मिश्रबंधु विनोद (चार भागों में, लगभग 2250 पृष्ठ)।
- **प्रकाशन** : भाग 1, 2, 3 — 1913 ई.; भाग 4 — 1934 ई.।
- **विशेषताएँ**
- **आधार-सामग्री** : कवियों के स्वरचित ग्रंथ, शिवसिंह सरोज तथा अन्य प्राचीन संग्रह, ग्रियर्सन का ग्रंथ, मुंशी देवीप्रसाद (जोधपुर) के लेख।
- **नागरी प्रचारिणी सभा की खोज** : 1900 ई. में सभा ने हिंदी की हस्तलिखित पुस्तकों की खोज शुरू की। 1900–1908 ई. तक इसके निरीक्षक बाबू श्यामसुंदर दास रहे; 1908–1916 ई. तक श्यामबिहारी मिश्र और शुकदेवबिहारी मिश्र। इस खोज में मिले नए कवियों की जानकारी मिश्रबंधुओं ने अपने ग्रंथ में जोड़ी।
- **अन्य रचना** : हिंदी नवरत्न (1910 ई.)। इसमें नौ कवि हैं : तुलसीदास, सूरदास, देव, बिहारी, त्रिपाठी-बंधु (भूषण व मतिराम), केशव, कबीर, चंद और हरिश्चंद्र।
- **मिश्रबंधुओं का काल-विभाजन** (विक्रम संवत्)

मुख्य काल	उप-विभाग	अवधि (वि.सं.)
आरंभिक काल	पूर्वारंभिक काल	700 – 1343
	उत्तरारंभिक काल	1344 – 1444
माध्यमिक काल	पूर्व माध्यमिक काल	1445 – 1560
	प्रौढ़ माध्यमिक काल	1561 – 1680
अलंकृत काल	पूर्वालंकृत काल	1681 – 1790
	उत्तरालंकृत काल	1791 – 1889
परिवर्तन काल	—	1890 – 1925
वर्तमान काल	—	1926 से अब तक

- **इस विभाजन की कमियाँ** : कालखंडों के नाम अलग-अलग आधार पर रखे गए; परिवर्तन काल अनावश्यक है; अलंकृत काल केवल आंतरिक प्रवृत्ति पर आधारित है; विभाजन का कोई स्पष्ट एक आधार नहीं।
- **परीक्षा-बिंदु** : शुक्ल जी ने इसे **'बड़ा भारी कवि वृत्त संग्रह'** और मिश्रबंधुओं को **'परिश्रमी संकलनकर्ता'** कहा।

2.5 आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- **ग्रंथ** : हिंदी साहित्य का इतिहास (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)।
- **प्रकाशन** : जनवरी 1929 ई. में यह हिंदी शब्दसागर की भूमिका के रूप में छपा। उसी वर्ष शुक्ल जी ने उसमें बहुत-सी बातें बढ़ाकर इसे स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। 1940 ई. में परिवर्धित-संशोधित संस्करण आया।
- हिंदी शब्दसागर के निर्माण में तीन विद्वानों का योगदान माना जाता है : बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रामचंद्र वर्मा।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

- **विशेषताएँ**
- **शुक्ल के इतिहास-लेखन की आधार-सामग्री** : मिश्रबंधु विनोद (मिश्रबंधु), हिंदी कोविद रत्नमाला (श्यामसुंदर दास), कविता कौमुदी (रामनरेश त्रिपाठी), ब्रजमाधुरी सार (वियोगी हरि)।
- **शुक्ल जी का काल-विभाजन** (विक्रम संवत्)

काल	नाम	अवधि (वि.सं.)	ई. में (लगभग)
आदिकाल	वीरगाथा काल	1050 – 1375	993 – 1318
पूर्व मध्यकाल	भक्तिकाल	1375 – 1700	1318 – 1643
उत्तर मध्यकाल	रीतिकाल	1700 – 1900	1643 – 1843
आधुनिक काल	गद्यकाल	1900 से अब तक	1843 से अब तक

- **जीवन** : जन्म 11 अक्टूबर 1884 ई.; मृत्यु 2 फ़रवरी 1941 ई.।
- **अन्य प्रमुख रचनाएँ** : रस मीमांसा (सैद्धांतिक समीक्षा), गोस्वामी तुलसीदास और महाकवि सूरदास (व्यावहारिक समीक्षा), चिंतामणि (निबंध, चार भाग), विश्व प्रपंच (दर्शन), मधुस्रोत (काव्य-संग्रह)। संपादन : जायसी ग्रंथावली और नागरी प्रचारिणी पत्रिका।
- **प्रसिद्ध कथन** : "यदि प्रबंधकाव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता।"
- **परीक्षा-बिंदु** : आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के बाद हिंदी भाषा और साहित्य को सबसे अधिक देने वाले शुक्ल जी माने जाते हैं।

आदिकाल के लिए शुक्ल जी के बारह ग्रंथ

शुक्ल जी ने वीरगाथा काल का नाम तय करने के लिए इन **बारह ग्रंथों** को आधार बनाया :

1. विजयपाल रासो
2. हम्मीर रासो
3. पृथ्वीराज रासो
4. परमाल रासो
5. बीसलदेव रासो
6. खुमाण रासो
7. कीर्तिलता
8. कीर्तिपताका
9. विद्यापति की पदावली
10. जयचंद्र प्रकाश
11. जयमयंक जस चंद्रिका
12. अमीर खुसरो की पहेलियाँ

परीक्षा-बिंदु : इन बारह में से शुक्ल जी ने केवल **चार** को अपभ्रंश काव्य माना — कीर्तिलता, कीर्तिपताका, विजयपाल रासो, हम्मीर रासो। बाकी **आठ** को देशभाषा काव्य माना।

शुक्ल का मत — इतिहास-लेखन की पद्धति

- "एक ही काल और एक ही कोटि की रचना के भीतर जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की परंपराएँ चली हुई पाई गई हैं, वहाँ अलग-अलग शाखाएँ करके सामग्री का विभाग किया गया है।"
- "कवियों के परिचयात्मक विवरण मैंने प्राय: 'मिश्रबंधु विनोद' से ही लिये हैं।"
- "जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।"

2.6 अन्य महत्त्वपूर्ण इतिहासकार (आदिकाल के संदर्भ में)

- **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** (जन्म 1907, ग्राम छपरा, जिला बलिया; निधन 19 मई 1979)
- **डॉ. नगेंद्र** (जन्म 1915; निधन 27 अक्टूबर 1999)

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

विद्वान	अभिमत
हजारीप्रसाद द्विवेदी	**भारतीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास**
गजानन माधव मुक्तिबोध	ऐतिहासिक-सामाजिक शक्तियों के रूप में जनता के दुःख और कष्टों से उपजा
रामविलास शर्मा	भक्ति आंदोलन एक **जातीय और जनवादी** आंदोलन है

आलोचना : शुक्ल जी का मत (हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति की ओर ध्यान ले जाने के सिवा दूसरा मार्ग क्या था) अर्द्धसत्य माना जाता है, और द्विवेदी जी का मत भी उतना ही एकांगी है। भक्ति की सांस्कृतिक परंपरा प्रमुख मान भी ली जाए, तो आंदोलन के विस्तार और प्रभाव में सामाजिक स्थितियों का योगदान नकारा नहीं जा सकता।

उद्गम स्थल : शुक्ल जी ने दक्षिण में भक्ति का उद्भव स्वीकार किया।

1.5 प्रमुख दार्शनिक संप्रदाय (तालिका)

मत	प्रवर्तक	मूल सिद्धांत	हिंदी साहित्य पर प्रभाव
अद्वैतवाद	आदिगुरु शंकराचार्य	ब्रह्म और जीव में भेद नहीं; जगत् मिथ्या (माया); ज्ञान ही एकमात्र साधना; भक्ति को 'विद्या माया' माना	रामानंद और कबीर के माध्यम से निर्गुण संत काव्य को प्रेरणा; ब्रह्म निर्गुण है
विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य (1016–1137 ई.)	ब्रह्म चित् और अचित् से विशिष्ट; सृष्टि माया नहीं, वास्तविक; 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी'	रामानंद और तुलसीदास पर गहरा प्रभाव; प्रायः सभी सगुण भक्त कवि प्रभावित
द्वैतवाद	मध्वाचार्य	जीव, जगत् और ब्रह्म भिन्न; **पंचभेद सिद्धांत**; मूलमंत्र 'तदीयः त्वम् असि'	उत्तर भारत में प्रभाव कम
द्वैताद्वैतवाद (भेदाभेदवाद)	निम्बार्काचार्य (12वीं शती)	संसार ब्रह्म से भिन्न भी, अभिन्न भी; आधार कार्य-कारण संबंध	राधा-कृष्ण की उपासना; निर्गुण-सगुण दोनों कवि प्रभावित
शुद्धाद्वैतवाद	वल्लभाचार्य	ब्रह्म माया से अलिप्त होने के कारण शुद्ध; 'सर्व खलु इदं ब्रह्म'; जगत् उसकी लीला का विलास	कृष्णभक्ति शाखा (पुष्टिमार्ग)

अन्य संप्रदाय : रुद्र संप्रदाय (विष्णुस्वामी), चैतन्य संप्रदाय (महाप्रभु चैतन्य), महानुभाव संप्रदाय (चक्रधर), वारकरी संप्रदाय (आचार्य पुंडलिक)। इनसे भक्ति आंदोलन का अंतः-प्रादेशिक स्वरूप बना।

'श्री संप्रदाय' (श्रीवैष्णव) : विशिष्टाद्वैतवादियों ने आलवार संतों के भक्ति मार्ग और वेद-उपनिषद के ज्ञान, कर्म और उपासना मार्ग का समन्वय करके **प्रपत्ति मार्ग** की प्रतिष्ठा की। इसके आदि आचार्य **रंगनाथ मुनि (824–924 ई.)** हैं।

पंचभेद सिद्धांत (मध्वाचार्य) : ईश्वर और जीव, ईश्वर और जड़, जीव और जड़, एक जीव और दूसरे जीव, एक जड़ और दूसरे जड़ के बीच नित्य भेद।

1.6 वैष्णव भक्ति की पृष्ठभूमि

- वैष्णव भक्ति का मूल आधार **भागवत धर्म** है, जिसके आराध्य वासुदेव हैं। षड्गुणों से युक्त होने के कारण उन्हें 'भगवान' या 'भगवत' कहा जाता है।
- मध्यकाल में वैष्णव भक्ति का संबंध सगुण भक्ति काव्य से है, जिसमें राम और कृष्ण केंद्र में हैं। उत्तर भारत में इसका प्रचार दक्षिण के बाद हुआ।
- **सामाजिक योगदान :** जाति-पाँति की सीमाएँ टूटीं; प्राणिमात्र के प्रति प्रेम और उदार दृष्टि का विकास हुआ; प्रेम और अहिंसा जैसे मूल्यों ने निराश हिंदू मानस को जीने की नई प्रेरणा दी।
- **सांस्कृतिक योगदान :** भक्ति को एक नए रस के रूप में प्रतिष्ठा मिली; राम-कृष्ण का विपुल साहित्य रचा गया; मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत और परिधान भी प्रभावित हुए।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

1.7 आलवार संत

- दक्षिण भारत में आलवार संतों की परंपरा 9वीं शताब्दी तक चलती रही। इन्होंने 'नाम संकीर्तन' भक्ति-धारा से दक्षिण को रस-सिक्त किया और भक्ति की लहर उत्तर की ओर बढ़ाई।
- आलवार **बारह** माने जाते हैं। इनमें **गोदा (अंडाल)** नामक प्रसिद्ध स्त्री भक्त भी हैं। इनके गीत तमिल भाषा में **नालायिर दिव्य प्रबन्धम्** में संगृहीत हैं, जिसे **'तमिल वेद'** भी कहते हैं।
- आलवार का अर्थ : जिसे भगवान की स्वतः स्फूर्त अनुभूति होती है और जो भावविभोर होकर ईश्वर को आत्मसमर्पित रहता है। अधिकांश आलवार शूद्र, स्त्री, छोटी जाति के किसान और कारीगर थे।
- सबसे लोकप्रिय आलवार **नम्मालवार (शठकोपि)** शूद्र जाति के थे; **मधुर कवि** ब्राह्मण होकर भी शठकोपि के शिष्य थे।
- माना जाता है कि श्रीमद्भागवत आलवारों से प्रभावित है। भागवत में द्रविड़ भक्ति का उल्लेख है : "उत्पन्ना द्रविड़े साहं वृद्धिं कर्णाटके गता।"
- डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार आलवारों ने यशोदा भाव, गोपी भाव और पति भाव से कृष्ण के प्रति प्रेम निवेदित किया। ऐसी भक्ति मीरा, राधावल्लभ और हित हरिवंशी संप्रदाय में दिखती है।
- आलवार भक्ति को वैदिक और शास्त्रीय रूप देने वाले आचार्य : **रंगनाथ मुनि (824–924 ई.), यमुनाचार्य** (रंगनाथ मुनि के पुत्र), **रामानुजाचार्य (1016–1137 ई.)** और मध्वाचार्य।

1.8 भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप

- **उक्ति :** "भक्ति द्राविड़ी उपजी, लाए रामानंद।" भक्ति आंदोलन का उदय तमिल प्रांत के आलवार संतों से हुआ।
- 10वीं से 13वीं शताब्दी तक रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य और निम्बार्काचार्य से दार्शनिक आधार पाकर यह उत्तर भारत में फैला। उत्तर भारत में इसे नवीन रूप में फैलाने का श्रेय **रामानंद** को है।
- रामानंद ने रामानुज के विशिष्टाद्वैत को मानकर भक्ति का अलग संप्रदाय स्थापित किया और भक्ति को निम्न वर्ग के लिए भी सुलभ बनाया। उन्होंने लक्ष्मीनारायण की जगह **सीताराम** को उपास्य बनाया।
- **वल्लभाचार्य** ने श्रीकृष्ण-राधा को उपास्य मानकर कृष्णभक्ति की नई धारा बहाई, जिससे अनेक संप्रदायों का जन्म हुआ।
- 16वीं शताब्दी तक भक्ति आंदोलन संतों, सूफियों और राम-कृष्ण भक्तों के माध्यम से जन-जीवन में गहरे पैठ चुका था। महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, मध्य प्रदेश, मगध, उड़ीसा, राजस्थान, असम और बंगाल में भी इसका विस्तार हुआ।
- **प्रांतीय उपज :** बंगाल में सहजिया, बाउल, सत्यपीर संप्रदाय; उड़ीसा में पंच सखा संप्रदाय; महाराष्ट्र में वारकरी और महानुभाव संप्रदाय।
- उपासना-पद्धति, उपास्य और दार्शनिक दृष्टि की भिन्नता के बावजूद इसके मूल में एक ही तत्त्व था — **भक्ति**। यही भक्ति आंदोलन की विशिष्टता थी।

कथन-बॉक्स 1 : भक्ति आंदोलन के संबंध में प्रमुख कथन

- **ग्रियर्सन —** (भाव) बिजली की चमक की तरह अचानक पुराने धार्मिक मतों के अंधकार के ऊपर एक नई बात दिखाई दी; कोई हिंदू नहीं जानता कि यह कहाँ से आई।
- **शुक्ल —** (भाव) मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित होने पर हिंदू जनता के पास गौरव और उत्साह के लिए अवकाश नहीं रहा; अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग क्या था।
- **शुक्ल —** (भाव) भक्ति का जो स्रोत दक्षिण से धीरे-धीरे उत्तर की ओर आ रहा था, उसे राजनीतिक परिवर्तन से शून्य पड़ती जनता के हृदय में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।
- **हजारीप्रसाद द्विवेदी —** (भाव) अगर इस्लाम नहीं आया होता, तब भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।
- **वल्लभाचार्य —** "म्लेच्छाक्रांतेषु देशेषु पापैकनिलयेषु च। सत्पीड़ाव्यग्रलोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥"
- **कबीर —** "भक्ति द्राविड़ी उपजी, लाए रामानंद। परगट किया कबीर ने, सात दीप नौ खंड॥"
- **श्रीमद्भागवत —** "उत्पन्ना द्रविड़े साहं वृद्धिं कर्णाटके गता। क्वचित्क्वचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता॥"
- **ग्रियर्सन —** भक्तिकाल हिंदी साहित्य का 'स्वर्ण युग'। **रामविलास शर्मा —** 'लोक जागरण काल'।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 2
हिंदी गद्य साहित्य का विकास

UPESSC का आधिकारिक पाठ्यक्रम (TGT हिंदी)

निबन्ध, नाटक, उपन्यास, कहानी, हिन्दी गद्य की लघु विधाएँ – जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-साहित्य, गद्यकाव्य, व्यंग्य। हिन्दी के रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ।

इस भाग में

- 1. हिंदी गद्य का उद्भव और विधाओं का मानचित्र
- 2. हिंदी कहानी का विकास
- 3. हिंदी नाटक का विकास
- 4. हिंदी उपन्यास का विकास
- 5. एकांकी का विकास
- 6. हिंदी निबंध का विकास
- 7. हिंदी आत्मकथा का विकास
- 8. हिंदी जीवनी का विकास
- 9. रेखाचित्र और संस्मरण
- 10. डायरी, रिपोर्ताज और यात्रा-वृत्त
- 11. हिंदी आलोचना का विकास
- 12. गद्यकाव्य (गद्यगीत) का विकास
- 13. हिंदी व्यंग्य का विकास

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 2 : हिंदी गद्य साहित्य का विकास

1. हिंदी गद्य का उद्भव और विधाओं का मानचित्र

1.1 खड़ी बोली गद्य से पहले

बिंदु	तथ्य
गद्य का आरंभिक रूप	ब्रज और राजस्थानी में टीकाएँ, वार्ताएँ, कथाएँ
गंग कवि	'चंद छंद बरनन की महिमा' — अकबर के समय की खड़ी बोली गद्य की आरंभिक रचना (प्रचलित मत)
रामप्रसाद निरंजनी	'भाषा योगवासिष्ठ' (1741) — परिनिष्ठित खड़ी बोली गद्य का आरंभिक ग्रंथ
गोरखपंथी / वैष्णव गद्य	गोरखनाथ पंथ की गद्य-कथाएँ; गोकुलनाथ की वार्ताएँ (ब्रज गद्य)
जटमल	'गोरा बादल की कथा' (1623) — खड़ी बोली मिश्रित गद्य

1.2 फ़ोर्ट विलियम कॉलेज और चार आरंभिक गद्यकार

फ़ोर्ट विलियम कॉलेज (कलकत्ता, 1800) के अध्यक्ष जॉन गिलक्रिस्ट ने हिंदी-उर्दू गद्य की पुस्तकें तैयार करवाईं। इसी प्रेरणा से हिंदी खड़ी बोली गद्य की नींव पड़ी।

गद्यकार	कृति	टिप्पणी
इंशा अल्लाह ख़ाँ	रानी केतकी की कहानी (लगभग 1803)	ठेठ हिंदी की कहानी; अरबी-फ़ारसी से परहेज़
लल्लूलाल	प्रेमसागर (1803)	भागवत के दशम स्कंध पर आधारित; ब्रजमिश्रित खड़ी बोली
सदल मिश्र	नासिकेतोपाख्यान	खड़ी बोली गद्य; बिहारी पुट
सदासुखलाल 'नियाज़'	सुखसागर	भागवत पर आधारित, अनुवाद-सा

इन्हीं चारों को हिंदी गद्य के 'आरंभिक चार स्तंभ' कहा जाता है।

1.3 उन्नीसवीं सदी : शैली-भेद और भारतेन्दु

गद्यकार	विशेषता
राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद'	उर्दू-बहुल शैली के पक्षधर; 'राजा भोज का सपना' (1853) को पहला निबंध माना जाता है
राजा लक्ष्मण सिंह	संस्कृतनिष्ठ शुद्ध हिंदी के पक्षधर; शकुंतला नाटक का अनुवाद (1863), मेघदूत
भारतेन्दु हरिश्चंद्र	खड़ी बोली को सर्वमान्य गद्य-रूप दिया; नाटक, निबंध, यात्रा-वृत्त, आत्मकथा-अंश आदि का आरंभ
महावीरप्रसाद द्विवेदी	'सरस्वती' (1903 से संपादन) के माध्यम से भाषा का व्याकरण-सम्मत परिमार्जन

पत्रकारिता और गद्य — मुद्रणालय और समाचार-पत्रों ने गद्य को विधाओं में बाँटा : निबंध पहले आया; नाटक और उपन्यास बंगला व पाश्चात्य प्रभाव में; कहानी 'सरस्वती' (1900) के साथ; आलोचना पत्र-पत्रिकाओं की समीक्षाओं से।

1.4 गद्य की विधाएँ : एक नज़र में

इस भाग के आगे के अध्यायों में हर विधा का विस्तृत विवरण है; यहाँ केवल वह नक्शा है जो बताता है कि किस विधा का ब्योरा कहाँ मिलेगा।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

विधा	अध्याय	आरंभ का संकेत (प्रचलित मत)
कहानी	2	द्विवेदी युग, 'सरस्वती'; पहली कहानी पर विद्वानों में मतभेद
नाटक	3	भारतेन्दु-युग से आधुनिक नाटक; प्राचीनतम नाटक पर मतभेद
उपन्यास	4	भारतेन्दु-युग; पहला उपन्यास पर मतभेद
एकांकी	5	भारतेन्दु — 'वसंत पूजा' (1872)
निबंध	6	'राजा भोज का सपना' (1853)
आत्मकथा	7	'अर्द्धकथानक' (1641)
जीवनी	8	'भक्तमाल' (1585) की परंपरा
रेखाचित्र, संस्मरण	9	'पद्म पराग' (1929)
डायरी, रिपोर्ताज, यात्रा-वृत्त	10	जेल डायरी (1930); 'तूफ़ानों के बीच' (1941); भारतेन्दु की यात्राएँ
आलोचना	11	'हिंदी प्रदीप' और भारतेन्दु का 'नाटक' (1883)

2. हिंदी कहानी का विकास

2.1 कहानी : अर्थ और पाश्चात्य परंपरा

बिंदु	तथ्य
प्राचीन नाम	संस्कृत में 'गल्प' और 'आख्यायिका'
पश्चिम में नाम	'शॉर्ट स्टोरी'
आधुनिक कहानी-कला का आरंभ	अमेरिका में एडगर एलन पो (1809–1849 ई.) से माना जाता है
पो की परिभाषा	कहानी ऐसा आख्यान है जो इतना छोटा हो कि एक बैठक में पढ़ लिया जाए और पाठक पर एक ही प्रभाव छोड़े
प्रेमचंद की परिभाषा	कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या एक मनोभाव को दिखाना ही लक्ष्य रहता है; पात्र, शैली और कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं
हिंदी कहानी का उद्भव	द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका (1900 ई.) के प्रकाशन के साथ

2.2 हिंदी की पहली कहानी : विद्वानों के मत

विद्वान	पहली कहानी	वर्ष	लेखक
आचार्य रामचंद्र शुक्ल	इंदुमती	1900	किशोरीलाल गोस्वामी
डॉ. बच्चन सिंह	प्रणयिनी परिणय	1887	किशोरीलाल गोस्वामी
देवी प्रसाद वर्मा	एक टोकरी भर मिट्टी	1901	माधवराव सप्रे
डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल	ग्यारह वर्ष का समय	1903	आचार्य रामचंद्र शुक्ल

ध्यान रखें

कई विद्वानों ने 'इंदुमती' को शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' की छाया बताकर मौलिक कहानी की सूची से बाहर रखा। शुक्ल जी का तर्क है कि यदि 'इंदुमती' किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो वही हिंदी की मौलिक कहानी ठहरती है; उनके क्रम में इसके बाद 'ग्यारह वर्ष का समय' और फिर 'दुलाईवाली' आती हैं।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

• राजेन्द्रबाला घोष 'बंग महिला' को हिंदी की पहली कहानी-लेखिका माना जाता है; 'दुलाईवाली' उनकी प्रमुख कहानी है।

बंग महिला की कहानी	वर्ष
चंद्रदेव से मेरी बातें	1904
कुंभ में छोटी बहू	1906
दुलाईवाली	1907
दलिया	1909

2.3 'सरस्वती' में छपी आरंभिक कहानियाँ

कहानी	वर्ष	कहानीकार
इंदुमती	1900	किशोरीलाल गोस्वामी
प्लेग की चुड़ैल	1902	लाला भगवानदीन
ग्यारह वर्ष का समय	1903	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
एक के दो दो	1906	लाला पार्वतीनंदन
दुलाईवाली	1907	बंग महिला
राखीबंद भाई	1909	वृंदावनलाल वर्मा
रक्षाबंधन	—	विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'
सौत	1915	प्रेमचंद
पंच परमेश्वर	1916	प्रेमचंद
उसने कहा था	1915	चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'

2.4 कहानी के विकास के चार चरण

क्रम	चरण
1	प्रेमचंद-पूर्व हिंदी कहानी
2	प्रेमचंद-युगीन हिंदी कहानी
3	प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी
4	समकालीन हिंदी कहानी (नयी कहानी और उसके बाद)

2.5 प्रेमचंद-पूर्व हिंदी कहानी

1900 ई. से पहले के कथा-संग्रह

रचनाकार	रचना	वर्ष
राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद'	वामा मनोरंजन	1886
चंडीप्रसाद सिंह	हास्य रत्न	1886
किशोरीलाल गोस्वामी	प्रणयिनी परिणय	1887
अंबिकादत्त व्यास	कथा-कुसुम कलिका	1888

1900 ई. के बाद की आरंभिक कहानियाँ

कहानीकार	कहानियाँ
किशोरीलाल गोस्वामी	इंदुमती (1900), गुलबहार (1900)

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 3
काव्य के भेद

UPESSC का आधिकारिक पाठ्यक्रम (TGT हिंदी)
रस के अवयव, भेद, छन्द, अलंकार, शब्दालंकार, अर्थालंकार, काव्यगुण, काव्य दोष।

इस भाग में

- 1. काव्य : लक्षण और भेद
- 2. रस
- 3. छंद
- 4. अलंकार
- 5. काव्यगुण
- 6. काव्यदोष
- 7. त्वरित स्मरण सारणी

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 3 : काव्य के भेद

1. काव्य : लक्षण और भेद

1.1 काव्य के प्रमुख लक्षण (परिभाषाएँ)

काव्य क्या है, इस प्रश्न पर संस्कृत के आचार्यों ने अलग-अलग दृष्टि से विचार किया। किसी ने शब्द-अर्थ को आधार माना, किसी ने रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति या रस को। नीचे पहले सभी लक्षण एक नज़र में हैं, फिर हर लक्षण की व्याख्या।

आचार्य	काव्य-लक्षण	आशय
भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्	शब्द और अर्थ का साथ ही काव्य
दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली	इष्ट अर्थ से युक्त पदावली काव्य का शरीर
वामन	रीतिरात्मा काव्यस्य	रीति काव्य की आत्मा
आनंदवर्धन	काव्यस्यात्मा ध्वनिः	ध्वनि काव्य की आत्मा
कुंतक	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्	वक्रोक्ति काव्य का जीवन
क्षेमेंद्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्	औचित्य काव्य का जीवन
मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि	दोषरहित, गुणयुक्त शब्द-अर्थ; अलंकार कहीं-कहीं न भी हो
विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्	रसयुक्त वाक्य ही काव्य
पंडितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्	रमणीय अर्थ देने वाला शब्द काव्य

लक्षणों की व्याख्या

(1) भामह : "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"। भामह (काव्यालंकार) ने कहा कि शब्द और अर्थ जब एक-दूसरे के साथ सुंदर ढंग से मिले हों, तब काव्य बनता है। यह काव्य की पहली व्यवस्थित परिभाषा मानी जाती है। इसकी कमी यह बताई जाती है कि शब्द और अर्थ का साथ तो हर वाक्य में होता है, इसलिए यह लक्षण बहुत व्यापक हो जाता है। भामह अलंकारवादी थे, इसलिए उनके मत में सुंदरता का साधन अलंकार है।

(2) दण्डी : 'काव्यादर्श' में दण्डी ने इष्ट (अभिप्रेत, सुंदर) अर्थ से युक्त पदावली को काव्य का **शरीर** कहा और अलंकारों को उस शरीर की शोभा बढ़ाने वाले धर्म माना। उन्होंने ही काव्य को गद्य, पद्य और मिश्र, तीन रूपों में बाँटा।

(3) वामन : "रीतिरात्मा काव्यस्य"। 'काव्यालंकारसूत्रवृत्ति' में वामन ने पहली बार काव्य की **आत्मा** की खोज की और रीति को आत्मा माना। रीति का अर्थ है **विशिष्ट पद-रचना** ("विशिष्टा पदरचना रीतिः"), और यह विशिष्टता **गुणों** से आती है। वामन ने वैदर्भी, गौड़ी और पांचाली, तीन रीतियाँ मानीं।

(4) आनंदवर्धन : "काव्यस्यात्मा ध्वनिः"। 'ध्वन्यालोक' में आनंदवर्धन ने कहा कि काव्य का असली सौंदर्य उसके **व्यंग्य अर्थ** (ध्वनि) में है, जो शब्दों के सीधे अर्थ से आगे झलकता है। जैसे स्त्री के अंगों से अलग उसका लावण्य झलकता है, वैसे ही महाकवियों की वाणी में वाच्य अर्थ से अलग प्रतीयमान अर्थ होता है। यह सिद्धांत संस्कृत काव्यशास्त्र में सबसे प्रभावशाली माना गया।

(5) कुंतक : "वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्"। 'वक्रोक्तिजीवित' में कुंतक ने कहा कि सामान्य बोलचाल से अलग, **चमत्कारपूर्ण, बाँकी कथन-शैली** ही काव्य का प्राण है। उन्होंने वक्रोक्ति को छह स्तरों पर देखा : वर्ण, पद-पूर्वार्ध, पद-परार्ध, वाक्य, प्रकरण और प्रबंध।

(6) क्षेमेंद्र : 'औचित्यविचारचर्चा' में क्षेमेंद्र ने कहा कि रस से सिद्ध काव्य का स्थिर जीवन **औचित्य** है। पद, वाक्य, रस, अलंकार, गुण, सब अपने उचित स्थान पर हों, तभी काव्य सुंदर बनता है।

(7) मम्मट : 'काव्यप्रकाश' में मम्मट का लक्षण है : "तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि", अर्थात् दोष-रहित, गुण-सहित शब्द और अर्थ काव्य हैं, जिनमें सामान्यतः अलंकार हों, पर कहीं स्पष्ट अलंकार न भी हों तो भी काव्य बना रहता है। यह संतुलित लक्षण माना गया। 'चंद्रालोक' के लेखक **जयदेव** ने इसकी आलोचना की : जो अलंकार-रहित शब्द-अर्थ को काव्य मानता है, वह अग्नि को उष्णता-रहित क्यों नहीं मानता?

(8) विश्वनाथ : "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"। 'साहित्यदर्पण' में विश्वनाथ ने रस को केंद्र में रखकर कहा कि रस जिसकी आत्मा हो, ऐसा वाक्य ही काव्य है। यह परिभाषा सरल और लोकप्रिय है। इसकी सीमा यह बताई जाती है कि इससे अलंकार-प्रधान या वस्तु-वर्णन वाली रचनाएँ काव्य की परिधि से बाहर हो जाती हैं।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

(9) पंडितराज जगन्नाथ : "रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्"। 'रसगंगाधर' में जगन्नाथ ने कहा कि रमणीय (मन को आनंद देने वाला) अर्थ बताने वाला **शब्द** काव्य है। उन्होंने काव्य को शब्द में माना, शब्द-अर्थ दोनों में नहीं। 'रमणीयता' को उन्होंने लोकोत्तर आह्लाद देने वाला ज्ञान कहा। इसे सबसे परिष्कृत लक्षणों में गिना जाता है।

हिंदी और पाश्चात्य विद्वानों के मत

- **आचार्य रामचंद्र शुक्ल ('कविता क्या है') :** जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था **रसदशा** कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।
- **महावीरप्रसाद द्विवेदी :** अंतःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।
- **वर्ड्सवर्थ :** कविता प्रबल भावनाओं का सहज उच्छलन है (Spontaneous overflow of powerful feelings)। **कॉलरिज :** सर्वोत्तम शब्द, सर्वोत्तम क्रम में (Best words in the best order)। **मैथ्यू अर्नाल्ड :** कविता जीवन की आलोचना है (Criticism of life)।

1.2 काव्य के भेद : एक नज़र में

आधार	भेद	स्पष्टीकरण
रचना का रूप	पद्य, गद्य, चंपू (मिश्र)	आचार्य दण्डी : गद्य, पद्य और मिश्र। गद्य-पद्य मिला हो तो चंपू
ग्रहण की इंद्रिय	दृश्य काव्य, श्रव्य काव्य	दृश्य : जो मंच पर देखा जाए (रूपक-उपरूपक); श्रव्य : जो सुना या पढ़ा जाए
बंध (कथा-संबंध)	प्रबंध काव्य, मुक्तक काव्य	प्रबंध में कथा का क्रम; मुक्तक का हर पद स्वतंत्र
अर्थ-चमत्कार (मम्मट)	उत्तम, मध्यम, अवर (अधम)	उत्तम : ध्वनि-काव्य; मध्यम : गुणीभूत व्यंग्य; अवर : चित्र-काव्य

मम्मट के तीन भेद : सरल व्याख्या

- **उत्तम काव्य (ध्वनि-काव्य) :** जहाँ व्यंग्य अर्थ, वाच्य (सीधे) अर्थ से अधिक चमत्कारी हो।
- **मध्यम काव्य (गुणीभूत व्यंग्य) :** जहाँ व्यंग्य अर्थ हो, पर वाच्य अर्थ से अधिक चमत्कारी न हो, उसके अधीन (गौण) रहे।
- **अवर या अधम काव्य (चित्र-काव्य) :** जहाँ व्यंग्य अर्थ न हो, केवल शब्द या अर्थ का चमत्कार (जैसे अनुप्रास, यमक) हो।

1.3 दृश्य काव्य

- दृश्य काव्य को **रूपक** भी कहते हैं, क्योंकि अभिनेता पात्र का रूप धारण करता है। आचार्य विश्वनाथ ने **रूपक के 10** और **उपरूपक के 18** भेद माने हैं।
- रूपक के भेद : नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी, प्रहसन। हिंदी में 'अंधेर नगरी' प्रहसन का प्रसिद्ध उदाहरण है।

1.4 श्रव्य काव्य : प्रबंध और मुक्तक

(क) महाकाव्य

- आचार्य विश्वनाथ (साहित्यदर्पण) के अनुसार लक्षण : **सर्गबद्ध** रचना, **आठ से अधिक सर्ग**, नायक देवता या कुलीन क्षत्रिय और **धीरोदात्त**, शृंगार, वीर या शांत में से एक रस **अंगी** (प्रधान), नाटक की सभी संधियाँ, सर्ग के अंत में छंद-परिवर्तन, प्रकृति, युद्ध, उत्सव आदि का वर्णन।
- हिंदी के प्रमुख महाकाव्य : पृथ्वीराज रासो, पद्मावत, रामचरितमानस, रामचंद्रिका, **प्रियप्रवास (1914, खड़ी बोली का पहला महाकाव्य)**, साकेत, कामायनी।

(ख) खंडकाव्य

- जीवन के किसी **एक प्रसंग या पक्ष** का वर्णन; कथा छोटी, सर्ग कम। उदाहरण : सुदामा चरित (नरोत्तमदास), पंचवटी और जयद्रथ वध (मैथिलीशरण गुप्त)।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

(ग) मुक्तक काव्य

- हर पद अपने-आप में पूरा; आगे-पीछे के प्रसंग की ज़रूरत नहीं। दो रूप : **पाठ्य मुक्तक** (जैसे बिहारी सतसई के दोहे, कबीर की साखियाँ) और **गेय मुक्तक** (जैसे सूरसागर और विनय पत्रिका के पद)।

परीक्षा-बिंदु

- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' : **विश्वनाथ**; 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' : **जगन्नाथ**; 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' : **भामह**।
- काव्य की आत्मा : रीति (**वामन**), ध्वनि (**आनंदवर्धन**); काव्य का जीवन : वक्रोक्ति (**कुंतक**), औचित्य (**क्षेमेंद्र**)।
- काव्य के गद्य, पद्य, मिश्र भेद : **दण्डी**; उत्तम-मध्यम-अवर भेद : **मम्मट**।
- रूपक 10, उपरूपक 18 : **विश्वनाथ**। खड़ी बोली का पहला महाकाव्य : **प्रियप्रवास**।

2. रस

2.1 रस : अर्थ और रस-सूत्र

- काव्य पढ़ने, सुनने या नाटक देखने से सहृदय को जो **अलौकिक आनंद** मिलता है, वही रस है। इसीलिए रस को **ब्रह्मानंद सहोदर** कहा गया है। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार रस अखंड, स्वयं-प्रकाश, आनंदमय और चिन्मय है।
- रस-सिद्धांत के प्रवर्तक **भरतमुनि** (नाट्यशास्त्र) हैं। उनका रस-सूत्र : **"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"** अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी (संचारी) भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।
- भरत के रस-सूत्र में **स्थायी भाव** का नाम नहीं है, पर सभी व्याख्याकार मानते हैं कि विभाव, अनुभाव और संचारी के संयोग से **स्थायी भाव ही रस-रूप** में बदलता है।
- भरतमुनि ने नाट्य के लिए **आठ रस** माने। **शांत रस** को बाद के आचार्यों ने जोड़ा और अभिनवगुप्त ने इसकी प्रबल प्रतिष्ठा की। मम्मट ने **नौ रस** माने। विश्वनाथ ने **वात्सल्य** को और रूप गोस्वामी ने **भक्ति** को रस के रूप में प्रतिष्ठित किया।

2.2 रस के अवयव (अंग)

अवयव	अर्थ	भेद / उदाहरण
स्थायी भाव	हृदय में स्थायी रूप से रहने वाला मूल भाव, जो अनुकूल परिस्थिति में जागकर रस बनता है	रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, निर्वेद (शम)
विभाव	स्थायी भाव को जगाने वाले कारण	(क) आलंबन : जिसके कारण भाव जागे (विषय) और जिसमें जागे (आश्रय) (ख) उद्दीपन : भाव को तीव्र करने वाली परिस्थितियाँ, जैसे चाँदनी, एकांत, आलंबन की चेष्टाएँ
अनुभाव	भाव जागने के बाद आश्रय की शारीरिक-मानसिक चेष्टाएँ (भाव के बाद आने से 'अनु-भाव')	कायिक, वाचिक, आहार्य और सात्त्विक
संचारी (व्यभिचारी) भाव	स्थायी भाव के साथ आने-जाने वाले क्षणिक भाव	कुल **33**

अवयवों को एक उदाहरण से समझिए

मान लीजिए, वन में अकेले जाते किसी यात्री के सामने अचानक शेर आ जाता है। यहाँ **शेर** आलंबन (विषय) है और **यात्री** आश्रय। सुनसान वन और शेर की दहाड़ उद्दीपन हैं। यात्री का काँपना, पसीना आना, चीखना और भागना अनुभाव हैं। उसके मन में क्षण-क्षण उठने वाली शंका, त्रास और दैन्य संचारी भाव हैं। इन सबके मेल से यात्री का **भय** (स्थायी भाव) पुष्ट होकर पाठक के मन में **भयानक रस** बनता है।

- **आठ सात्त्विक अनुभाव :** स्तंभ (जड़ हो जाना), स्वेद (पसीना), रोमांच, स्वरभंग, वेपथु (कंप), वैवर्ण्य (रंग उड़ना), अश्रु, प्रलय (मूर्च्छा)।
- **33 संचारी भाव :** निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिंता, मोह, स्मृति, धृति, व्रीड़ा, चपलता, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, स्वप्न, विबोध, अमर्ष, अवहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास, वितर्क।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

2.3 सभी रस : परिभाषा, उदाहरण और व्याख्या

(1) शृंगार रस : संयोग शृंगार

नायक और नायिका के प्रेम (रति) का वर्णन शृंगार रस है। जब प्रेमी-प्रेमिका के **मिलन**, साथ और प्रेम-क्रीड़ा का वर्णन हो, तो **संयोग शृंगार** होता है। शृंगार को **रसराज** कहा जाता है।

स्थायी भाव : रति। **आलंबन :** नायक-नायिका। **उद्दीपन :** चाँदनी, वसंत, उपवन, एकांत, प्रिय की चेष्टाएँ। **अनुभाव :** कटाक्ष, मुस्कान, रोमांच। **संचारी :** हर्ष, लज्जा, चपलता, औत्सुक्य।

उदाहरण :

> **बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।**
> **सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नटि जाय॥**
>
> — बिहारी

व्याख्या : गोपियों ने कृष्ण से बातें करने के लालच में उनकी मुरली छिपा दी है। कृष्ण माँगते हैं तो गोपी सौगंध खाती है कि उसके पास नहीं है, भौंहों से हँसती है, देने को कहती है और फिर मुकर जाती है। यहाँ **कृष्ण आलंबन** और **गोपी आश्रय** हैं; कृष्ण की बातों का रस (बतरस) उद्दीपन है; सौगंध खाना, भौंहों से हँसना, देने का वादा करके मुकरना अनुभाव हैं; हर्ष और चपलता संचारी हैं। प्रिय के साथ होने का आनंद है, इसलिए **संयोग शृंगार**।

(2) शृंगार रस : वियोग (विप्रलंभ) शृंगार

जहाँ प्रेमियों के **बिछुड़ने** की पीड़ा का वर्णन हो, पर फिर से मिलने की आशा बनी रहे, वहाँ वियोग शृंगार होता है। इसके चार भेद हैं : **पूर्वराग** (मिलन से पहले का प्रेम, जैसे गुण सुनकर या चित्र देखकर), **मान** (रूठना), **प्रवास** (प्रिय का परदेश जाना) और **करुण-विप्रलंभ**।

स्थायी भाव : रति। **उद्दीपन :** प्रिय की स्मृति, उससे जुड़े स्थान और ऋतुएँ। **अनुभाव :** रोना, आहें भरना, दुबला होना। **संचारी :** स्मृति, चिंता, विषाद, दैन्य, उन्माद।

उदाहरण :

> **निसिदिन बरसत नैन हमारे।**
> **सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जब तें स्याम सिधारे॥**
>
> — सूरदास

व्याख्या : कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ कहती हैं कि हमारी आँखें दिन-रात बरसती हैं; जब से श्याम गए हैं, हम पर सदा वर्षा ऋतु ही रहती है। **कृष्ण आलंबन**, **गोपियाँ आश्रय**; कृष्ण का जाना और उनकी याद उद्दीपन; लगातार आँसू बहना अनुभाव; स्मृति, चिंता और विषाद संचारी हैं। कृष्ण जीवित हैं और उनके लौटने की आशा है, इसलिए यह करुण नहीं, **वियोग शृंगार** है (प्रवास-जन्य)।

(3) हास्य रस

किसी व्यक्ति की विचित्र वेशभूषा, आकृति, वाणी या चेष्टा देखकर मन में जो हँसी (हास) जागती है, उसका परिपाक हास्य रस है।

स्थायी भाव : हास। **आलंबन :** विचित्र व्यक्ति या वस्तु। **उद्दीपन :** उसकी अटपटी बातें और हरकतें। **अनुभाव :** मुस्कराना, ठहाका लगाना, आँखें मिचना। **संचारी :** हर्ष, चपलता।

उदाहरण :

> **तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप, साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप।**
> **घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता, धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता॥**
>
> — काका हाथरसी

व्याख्या : गायक प्रेमप्रताप साज मिलाने में पंद्रह मिनट और आलाप में घंटा भर लगा देते हैं; जब वे राग में डूबते हैं, तब तक सारे श्रोता चुपचाप खिसक चुके होते हैं। यहाँ **गायक आलंबन** है, पाठक आश्रय है; लंबा आलाप और खाली होता सभागार उद्दीपन हैं; पाठक की हँसी अनुभाव है; हर्ष संचारी है। **हास्य रस**।

(4) करुण रस

किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु के **सदा के लिए नष्ट** हो जाने, या घोर विपत्ति से जो शोक जागता है, उसका परिपाक करुण रस है। भवभूति ने 'उत्तररामचरित' में करुण को ही एकमात्र रस कहा : **"एको रसः करुण एव"**।

स्थायी भाव : शोक। **आलंबन :** मृत व्यक्ति या नष्ट वस्तु। **उद्दीपन :** उसके गुणों, वस्तुओं की याद। **अनुभाव :** रोना, विलाप, छाती पीटना, भूमि पर गिरना। **संचारी :** विषाद, स्मृति, दैन्य, मोह, ग्लानि।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

उदाहरण :

> **सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥**
> **करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा॥**
>
> — तुलसीदास, रामचरितमानस

व्याख्या : राजा दशरथ के देह-त्याग के बाद सब रानियाँ शोक से व्याकुल होकर रोती हैं, उनके रूप, शील, बल और तेज का बखान करती हैं, अनेक प्रकार से विलाप करती हैं और बार-बार भूमि पर गिर पड़ती हैं। **मृत दशरथ आलंबन**, **रानियाँ आश्रय**; दशरथ के गुणों का स्मरण उद्दीपन; रोना, विलाप करना, भूमि पर गिरना अनुभाव; विषाद, स्मृति, दैन्य संचारी हैं। प्रिय के फिर मिलने की कोई आशा नहीं, इसलिए **करुण रस**।

(5) रौद्र रस

शत्रु के अपमानजनक व्यवहार, अन्याय या अत्याचार को देखकर जो **क्रोध** जागता है, उसका परिपाक रौद्र रस है। इसमें व्यक्ति का विवेक प्रायः छूट जाता है।

स्थायी भाव : क्रोध। **आलंबन :** शत्रु या अपराधी। **उद्दीपन :** शत्रु के कठोर वचन, अपमान, अन्याय। **अनुभाव :** आँखें लाल होना, होंठ चबाना, हाथ मलना, गर्जन, शस्त्र उठाना। **संचारी :** अमर्ष, उग्रता, आवेग, गर्व।

उदाहरण :

> **श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे।**
> **सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥**
>
> — मैथिलीशरण गुप्त, जयद्रथ वध

व्याख्या : अभिमन्यु की अन्यायपूर्ण हत्या का समाचार श्रीकृष्ण से सुनकर अर्जुन क्रोध से जल उठते हैं, अपना शील भूलकर दोनों हथेलियाँ मलने लगते हैं। **अभिमन्यु के हत्यारे (कौरव पक्ष) आलंबन**, **अर्जुन आश्रय**; अभिमन्यु-वध का समाचार उद्दीपन; क्षोभ से जलना, हथेलियाँ मलना अनुभाव; अमर्ष और उग्रता संचारी हैं। **रौद्र रस**।

(6) वीर रस

युद्ध, दान, दया या धर्म के लिए मन में जो **उत्साह** जागता है, उसका परिपाक वीर रस है। इसी आधार पर वीर रस के चार भेद माने जाते हैं : **युद्धवीर, दानवीर, दयावीर और धर्मवीर**।

स्थायी भाव : उत्साह। **आलंबन :** शत्रु, याचक, दीन-दुखी या धर्म। **उद्दीपन :** शत्रु का पराक्रम, रण-वाद्य, याचक की दशा। **अनुभाव :** भुजाएँ फड़कना, ललकारना, शस्त्र चलाना। **संचारी :** गर्व, धृति, हर्ष, मति, आवेग।

उदाहरण :

> **बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।**
> **खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥**
>
> — सुभद्राकुमारी चौहान

व्याख्या : कवयित्री झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का गान करती हैं, जो अंग्रेज़ी सेना से मर्दों की तरह डटकर लड़ीं। **अंग्रेज़ी सेना आलंबन**, **रानी लक्ष्मीबाई आश्रय**; युद्ध का वातावरण और लोकगायकों का गान उद्दीपन; डटकर लड़ना अनुभाव; गर्व, धृति, आवेग संचारी हैं। स्थायी भाव उत्साह है, इसलिए **वीर रस** (युद्धवीर)।

(7) भयानक रस

किसी भयंकर वस्तु, जीव या घटना को देखने-सुनने से जो **भय** उत्पन्न होता है, उसका परिपाक भयानक रस है।

स्थायी भाव : भय। **आलंबन :** भयंकर जीव, दृश्य या शत्रु। **उद्दीपन :** उसकी भीषण चेष्टाएँ, सुनसान स्थान। **अनुभाव :** काँपना, पसीना आना, चीखना, भागना, मूर्च्छा। **संचारी :** त्रास, शंका, दैन्य, मोह।

उदाहरण :

> **एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।**
> **बिकल बटोही बीच ही, परयो मूरछा खाय॥**

व्याख्या : राही के एक ओर अजगर है और दूसरी ओर सिंह; बीच में फँसा राही व्याकुल होकर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है। **अजगर और सिंह आलंबन**, **बटोही आश्रय**; दोनों ओर से घिर जाना उद्दीपन; व्याकुल होना और मूर्च्छा अनुभाव; त्रास और मोह संचारी हैं। **भयानक रस**।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 4

भाषा

UPESSC का आधिकारिक पाठ्यक्रम (TGT हिंदी)

हिन्दी की बोलियाँ, भाषाएँ, हिन्दी की शब्द सम्पदा, हिन्दी की ध्वनियाँ, देवनागरी लिपि, मानकीकरण, विकास, विशेषताएँ, त्रुटियाँ, सुधार के प्रयत्न।

इस भाग में

- 1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (आर्यभाषा से हिंदी तक)
- 2. भौगोलिक विस्तार : उपभाषाएँ और बोलियाँ
- 3. हिंदी का भाषिक स्वरूप : ध्वनियाँ, शब्द-संपदा, रूप और वाक्य
- 4. प्रयोग के विविध रूप और संवैधानिक स्थिति
- 5. देवनागरी लिपि : विकास, विशेषताएँ, मानकीकरण, दोष और सुधार
- 6. अंतिम रिवीजन : 25 तथ्य एक नज़र में

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 4 : भाषा

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (आर्यभाषा से हिंदी तक)

1.1 भाषा, विभाषा और बोली

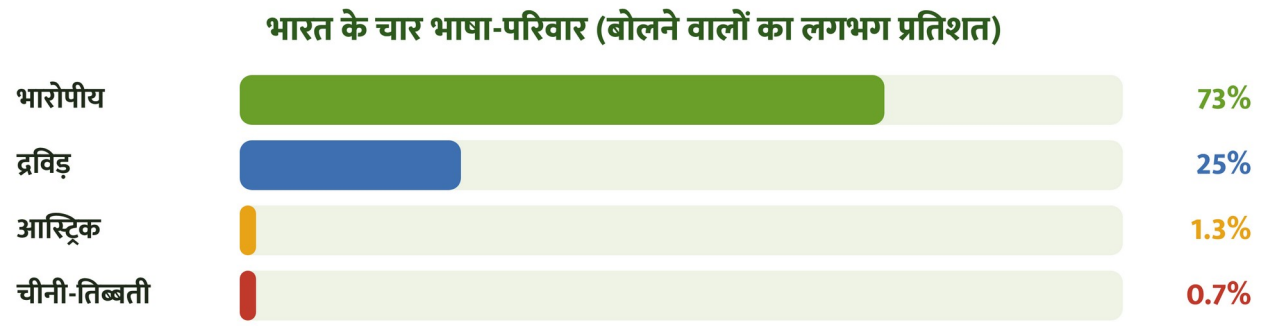
भाषा-विज्ञान में "भाषा", "विभाषा" और "बोली" का अंतर प्रश्नों में अक्सर पूछा जाता है। इनकी परिभाषाएँ इस प्रकार हैं।

शब्द	अर्थ	उदाहरण
बोली	छोटे क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा, जिसमें साहित्य-रचना प्रायः नहीं होती।	बघेली, मेवाती, मालवी
विभाषा	वह बोली जिसमें साहित्य-रचना होने लगती है और जिसका क्षेत्र बढ़ता है।	ब्रजभाषा, अवधी (काव्य-भाषा के रूप में)
भाषा	वह विभाषा जो साहित्य के माध्यम से परिनिष्ठित (मानक) और सर्वमान्य रूप पा जाती है।	खड़ी बोली पर आधारित मानक हिंदी

खड़ी बोली मेरठ, बिजनौर आदि क्षेत्र की बोली होते हुए भी राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति मिलने के कारण **मानक हिंदी** के पद पर पहुँची।

1.2 भारत के भाषा-परिवार

आकृति के आधार पर हिंदी **वियोगात्मक (विश्लिष्ट)** भाषा मानी जाती है और यह **भारोपीय परिवार** की **भारतीय-आर्य उपशाखा** से विकसित हुई है। भारत में चार भाषा-परिवार मिलते हैं।



चित्र 1 : भारत के चार भाषा-परिवार

परिवार	बोलने वाले (लगभग)	टिप्पणी
भारोपीय	73%	हिंदी, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि
द्रविड़	25%	तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि
आस्ट्रिक	1.3%	संथाली, मुंडारी आदि
चीनी-तिब्बती	0.7%	पूर्वोत्तर भारत की अनेक भाषाएँ

🎯 **परीक्षा-बिंदु:** हिंदी भारोपीय परिवार की भारतीय-आर्य उपशाखा की भाषा है। भारत में सर्वाधिक लोग (लगभग 73%) भारोपीय परिवार की भाषाएँ बोलते हैं। भारोपीय परिवार में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, बंगाली, फ़ारसी, ग्रीक, लैटिन, अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन आदि आती हैं।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

1.3 भारतीय आर्यभाषा का काल-विभाजन

भारतीय आर्यभाषा के विकास को तीन बड़े कालों में बाँटा जाता है। यही इस भाग का सबसे महत्वपूर्ण आधार है।

भारतीय आर्यभाषा का काल-विभाजन

प्राचीन आर्यभाषा 1500 ई.पू. – 500 ई.पू.	मध्यकालीन आर्यभाषा 500 ई.पू. – 1000 ई.	आधुनिक आर्यभाषा 1000 ई. से अब तक
वैदिक (छान्दस्) 1500–1000 ई.पू.	**पालि** 500 ई.पू.–1 ई.	**हिंदी**, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, उड़िया, असमिया आदि
लौकिक संस्कृत 1000–500 ई.पू.	**प्राकृत** 1–500 ई.	
	अपभ्रंश 500–1000 ई.	

चित्र 2 : भारतीय आर्यभाषा का काल-विभाजन

काल	समय	भाषाएँ / विशेषता
प्राचीन	1500 ई.पू. – 500 ई.पू.	वैदिक संस्कृत (छान्दस्, 1500–1000 ई.पू.) और लौकिक संस्कृत (1000–500 ई.पू.)
मध्यकालीन	500 ई.पू. – 1000 ई.	पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट
आधुनिक	1000 ई. – अब तक	हिंदी तथा बांग्ला, उड़िया, मराठी, सिंधी, असमिया, गुजराती, पंजाबी आदि

प्राचीन आर्यभाषाएँ

- **वैदिक संस्कृत (छान्दस्)** वेदों की भाषा है। इसका समय लगभग 1500 से 1000 ई.पू. माना जाता है।
- **लौकिक संस्कृत** (1000–500 ई.पू.) साहित्य और व्याकरण की परिनिष्ठित भाषा बनी। संस्कृत के व्याकरण-चिंतन में पाणिनि का योगदान सबसे बड़ा माना जाता है।
- भाषा-विज्ञान के विकास में पाणिनि, भर्तृहरि, सस्यूर, ब्लूमफ़ील्ड और चॉम्स्की के योगदान को सबसे अधिक माना गया है।

मध्यकालीन आर्यभाषाएँ : तीन चरण

चरण	नाम	समय	विशेष
प्रथम प्राकृत काल	पालि	500 ई.पू. – 1 ई.	बुद्ध के उपदेश पालि में हैं।
द्वितीय प्राकृत काल	प्राकृत	1 – 500 ई.	महावीर के उपदेश प्राकृत में हैं।
तृतीय प्राकृत काल	अपभ्रंश (और अवहट्ट)	500 – 1000 ई.	संक्रमणकालीन अवस्था; आधुनिक भाषाओं का आधार।

प्राकृत के प्रकार और उनसे विकसित भाषाएँ

परंपरागत भाषा-वैज्ञानिक मत (ग्रियर्सन, सुनीतिकुमार चटर्जी, धीरेन्द्र वर्मा आदि की पाठ्यपुस्तकीय परंपरा) में प्राकृत और अपभ्रंश के क्षेत्रीय भेदों से आधुनिक भाषाओं का विकास इस प्रकार बताया जाता है।

प्राकृत / अपभ्रंश	क्षेत्र	विकसित आधुनिक भाषाएँ
शौरसेनी	मथुरा-शूरसेन क्षेत्र (मध्यदेश)	पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी, गुजराती, पहाड़ी

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 5
व्याकरण

UPESSC का आधिकारिक पाठ्यक्रम (TGT हिंदी)

लिंग, वचन, कारक, सन्धि, समास, वर्तनी, वाक्य शुद्धिकरण, शब्द रूप – पर्यायवाची, विलोम, श्रुति समभिन्नार्थक शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द, मुहावरा, लोकोक्ति।

इस भाग में

- खंड 1 : ध्वनि और वर्ण
- खंड 2 : शब्द-विचार
- खंड 3 : पद-विचार (संज्ञा से विशेषण तक)
- खंड 4 : पद-विचार (क्रिया से अव्यय तक)
- खंड 5 : वाक्य-विचार
- खंड 6 : शब्द-भंडार

इस भाग में 6 खंड और 30 अध्याय हैं। सिलेबस के हर टॉपिक के साथ उनसे जुड़े आधार-टॉपिक (वर्ण, उपसर्ग-प्रत्यय, संज्ञा से अव्यय तक, वाक्य-भेद, विराम-चिह्न) भी दिए गए हैं।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

खंड 1 : ध्वनि और वर्ण

अध्याय 1 : वर्ण-विचार

🧠 एक नज़र में

- **ध्वनि** — मुख से उच्चरित, कान से सुनी जाने वाली भाषा की सबसे छोटी इकाई; **वर्ण** — उस ध्वनि का लिखित चिह्न।
- **वर्ण** — वह मूल ध्वनि जिसके और खंड न हो सकें; वर्णों का क्रमबद्ध समूह **वर्णमाला**।
- स्वर **11** (अ से औ, ऋ सहित); मूल व्यंजन **33** (स्पर्श 25 + अंतःस्थ 4 + ऊष्म 4); अयोगवाह — **अं, अः**।
- स्वरों का वर्गीकरण : मात्रा/काल, जीभ का भाग, मुख-विवर, ओष्ठ, नासिका के आधार पर।
- व्यंजनों का वर्गीकरण : उच्चारण-स्थान, प्रयत्न (स्पर्श, संघर्षी, स्पर्श-संघर्षी, नासिक्य, पार्श्विक, लुंठित, उत्क्षिप्त, अर्धस्वर), घोषत्व और प्राणत्व के आधार पर।
- वर्ग का **1, 3, 5** वर्ण अल्पप्राण; **2, 4** महाप्राण। वर्ग के **1, 2** अघोष; **3, 4, 5** सघोष।

1.1 ध्वनि, वर्ण और अक्षर

ध्वनि शब्दों की आधारशिला है। अ, आ, क, ख आदि जब मनुष्य की वागिंद्रिय से उच्चरित होते हैं, तब वे **ध्वनियाँ** हैं; इनके लिखित रूप को **वर्ण** (ध्वनि-चिह्न) कहते हैं। ध्वनि बोली और सुनी जाती है, वर्ण लिखा, पढ़ा और देखा जाता है। अंग्रेज़ी 'inch' और हिंदी 'इंच' में ध्वनि-भेद नहीं है, पर वर्ण (लिपि-चिह्न) भिन्न हैं।

वर्ण की परिभाषा — वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खंड न हो सकें। जैसे 'पानी' में दो ध्वनि-खंड हैं — पा, नी; इनके भी चार खंड हैं — प् + आ, न् + ई। इनके और टुकड़े नहीं हो सकते, इसलिए **प्, आ, न्, ई** मूल ध्वनियाँ या वर्ण हैं। 'सबेरा' में छह मूल ध्वनियाँ हैं — स्, अ, ब्, ए, र्, आ।

- वर्ण को **अक्षर** भी कहते हैं — 'अ + क्षर' अर्थात् जिसका क्षरण (नाश या विभाजन) न हो।
- **वर्णमाला** — वर्णों का व्यवस्थित, क्रमबद्ध समूह।
- **आधुनिक भाषाविज्ञान में 'अक्षर' (Syllable)** — एक ही श्वास-झटके में बोली जाने वाली ध्वनि-इकाई; इसके दो भेद — **मुक्ताक्षर** (अंत में स्वर; जैसे जा, खा, गा, रे) और **बद्धाक्षर** (अंत में व्यंजन; जैसे आप, एक, नाम)।

🎓 'वर्ण' और 'ध्वनि' पर दृष्टि-भेद

- **पारंपरिक व्याकरण** (पं. कामताप्रसाद गुरु आदि) 'वर्ण' और 'अक्षर' को एक मानता है — वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसके खंड न हों।
- **भाषाविज्ञान** में **ध्वनि** उच्चरित इकाई है, **वर्ण** उसका लिखित प्रतीक और **अक्षर (Syllable)** एक श्वास-झटके में बोली गई ध्वनि-इकाई (जिसमें एक स्वर अवश्य हो)।
- **आचार्य किशोरीदास वाजपेयी** के अनुसार वर्ण वह छोटी-से-छोटी ध्वनि है, जो कान का विषय है और जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

1.2 हिंदी वर्णमाला

वर्ग	वर्ण	संख्या
स्वर	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ	11
अयोगवाह	अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग)	2
स्पर्श व्यंजन	क ख ग घ ङ / च छ ज झ ञ / ट ठ ड ढ ण / त थ द ध न / प फ ब भ म	25
अंतःस्थ व्यंजन	य, र, ल, व	4
ऊष्म (संघर्षी) व्यंजन	श, ष, स, ह	4
संयुक्त व्यंजन	क्ष (क् + ष), त्र (त् + र), ज्ञ (ज् + ञ), श्र (श् + र)	4
उत्क्षिप्त (द्विगुण) व्यंजन	ड़, ढ़	2
आगत ध्वनियाँ	क़, ख़, ग़, ज़, फ़ (अरबी-फ़ारसी); ऑ (अंग्रेज़ी)	—

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

🎓 हिंदी वर्णों की संख्या : किसका क्या मत

- **44 वर्ण** — 11 स्वर + 33 मूल व्यंजन (केवल मूल वर्ण)।
- **46 वर्ण** — 11 स्वर + 33 व्यंजन + अं, अः (अनेक पारंपरिक व्याकरणों में)।
- **52 वर्ण** — 11 स्वर + 41 व्यंजन (33 मूल + अं, अः + ड़, ढ़ + क्ष, त्र, ज्ञ, श्र); मानक वर्णमाला को पूरा गिनने पर।
- **आधुनिक भाषावैज्ञानिक मत** — हिंदी के उच्चारण की दृष्टि से **ऋ** अब स्वर नहीं रहा (हिंदी में इसका उच्चारण 'रि' — र् + इ होता है), जबकि अंग्रेज़ी शब्दों के लिए **ऑ** नया स्वर बन गया है। इस दृष्टि से हिंदी के 11 स्वर हैं — अ, आ, ऑ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। कुछ विद्वान आगत ध्वनियों (क़, ख़, ग़, ज़, फ़) को जोड़कर व्यंजनों की संख्या और अधिक मानते हैं।
- **परीक्षा-सूत्र** : प्रश्न में 'मूल वर्ण' हो तो 44, 'अयोगवाह सहित' हो तो 46, 'मानक वर्णमाला / कुल वर्ण' हो तो 52 चुनें।

1.3 स्वर

स्वर वे वर्ण हैं, जिनका उच्चारण **स्वतंत्र रूप से**, बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के होता है और जिनके उच्चारण में भीतर से आने वाली वायु **मुख से बिना रुकावट** (निर्बाध) निकलती है। स्वर व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं।

स्वरों का वर्गीकरण

(क) मात्रा या उच्चारण-काल के आधार पर

भेद	परिभाषा	स्वर
ह्रस्व स्वर (मूल स्वर, एकमात्रिक)	जिनके उच्चारण में सबसे कम (एक मात्रा का) समय लगे; इनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों से नहीं होती	अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर (द्विमात्रिक)	जिनके उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगे	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
प्लुत स्वर (त्रिमात्रिक)	जिनके उच्चारण में तिगुना समय लगे; पुकारने या वेद-पाठ में; चिह्न '३'	ओ३म्, हे राम३

- दीर्घ स्वरों के दो प्रकार माने जाते हैं — **सजातीय/सवर्ण दीर्घ** (आ = अ + अ, ई = इ + इ, ऊ = उ + उ) और **संधि/संयुक्त स्वर** (ए = अ + इ, ऐ = अ + ए, ओ = अ + उ, औ = अ + ओ)।
- प्लुत का प्रयोग संस्कृत (विशेषतः वैदिक) में होता था; हिंदी में साधारणतः नहीं।

(ख) जीभ के प्रयुक्त भाग के आधार पर

- **अग्र स्वर** — जीभ का अगला भाग ऊपर उठे : **इ, ई, ए, ऐ**
- **मध्य स्वर** — जीभ का मध्य भाग : **अ**
- **पश्च स्वर** — जीभ का पिछला भाग : **आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ**

(ग) मुख-विवर (मुख के खुलने) के आधार पर

- **संवृत** (मुख सबसे कम खुला, जीभ सबसे ऊँची) : **इ, ई, उ, ऊ**
- **अर्धसंवृत** : **ए, ओ**
- **अर्धविवृत** : **ऐ, औ, अ, ऑ**
- **विवृत** (मुख सबसे अधिक खुला) : **आ**

(घ) ओठों की आकृति के आधार पर

- **वृत्तमुखी / वृत्ताकार** (ओठ गोल) : **उ, ऊ, ओ, औ, ऑ**
- **अवृत्तमुखी / अवृत्ताकार** (ओठ गोल नहीं) : **अ, आ, इ, ई, ए, ऐ**

(ङ) नासिका के आधार पर

- **निरनुनासिक** — केवल मुख से बोले जाने वाले : अ, आ, इ (आप, अपना, इधर)
- **अनुनासिक** — मुख और नासिका दोनों से : अँ, आँ, इँ (आँख, गाँव, दाँत, सँवारना)

(च) जाति के आधार पर

- **सवर्ण (सजातीय) स्वर** — एक ही स्थान से उच्चरित ह्रस्व-दीर्घ जोड़े : अ-आ, इ-ई, उ-ऊ।
- **असवर्ण (विजातीय) स्वर** — भिन्न स्थानों के : अ-इ, अ-उ, इ-उ।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सौंदर्यता	सौंदर्य	उत्कर्षता	उत्कर्ष
आधीन	अधीन	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
मंत्रीमंडल	मंत्रिमंडल	सन्यासी	संन्यासी
श्रीमति	श्रीमती	दृष्टा	द्रष्टा
अनुग्रहित	अनुगृहीत	संग्रहीत	संगृहीत
पैत्रिक	पैतृक	निरोग	नीरोग
प्रमाणिक	प्रामाणिक	बुद्धवार	बुधवार
अहिल्या	अहल्या	नर्क	नरक

❌ सामान्य गलतियाँ

- ❌ 'उपरोक्त' → ✅ **उपर्युक्त** (उपरि + उक्त, यण संधि)।
- ❌ 'कवियत्री' → ✅ **कवयित्री** (कवि का स्त्रीलिंग; 'कवयि' + त्री)।
- ❌ 'सौंदर्यता', 'माधुर्यता' → ✅ **सौंदर्य, माधुर्य** — ये स्वयं भाववाचक हैं, इनमें 'ता' जोड़ना दोहरा प्रत्यय है।
- ❌ 'पूज्यनीय' → ✅ **पूजनीय** (पूज् + अनीय) या **पूज्य** — दोनों प्रत्यय एक साथ नहीं।
- ❌ 'महत्व' → ✅ **महत्त्व** (महत् + त्व; 'त्' और 'त्व' मिलकर 'त्त्व')।
- ❌ 'अंताक्षरी' → ✅ **अंत्याक्षरी** (अंत्य + अक्षरी)।
- ❌ 'श्रीमति' → ✅ **श्रीमती** (स्त्रीलिंग 'ई' प्रत्यय)।

💡 'त्त्व' वाली वर्तनी याद रखें

जहाँ मूल शब्द के अंत में **'त्'** हो और उसमें **'त्व'** प्रत्यय जुड़े, वहाँ **'त्त्व'** लिखा जाता है : **महत् + त्व = महत्त्व, सत् + त्व = सत्त्व, तत् + त्व = तत्त्व।** पर 'मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व', 'नेतृ + त्व = नेतृत्व' में एक ही 'त' है।

📝 एक पेज में दोहराइए

- वर्तनी = अक्षरी = हिज्जे; शुद्ध वर्तनी का आधार शुद्ध उच्चारण।
- संज्ञा से विभक्ति अलग (राम ने), सर्वनाम से मिलाकर (उसने); दो विभक्ति — पहली मिलाकर (उसके लिए); बीच में 'ही/तक' — अलग (आप ही के लिए)।
- संयुक्त क्रिया के अंग अलग (आ सकता है); 'कर' मिलाकर (खाकर)।
- हाइफ़न : द्वंद्व (राम-लक्ष्मण), सा/जैसा से पहले (तुम-सा), भ्रम-निवारण (भू-तत्त्व)।
- मानक : गए, गई, नई, हुए, लिए, चाहिए; दीजिए, लीजिए।
- तत्सम में अनुस्वार, तद्भव में चंद्रबिंदु; ऊपर मात्रा हो तो बिंदु।
- णत्व : ऋ/र/ष के बाद 'ण' (कृष्ण, रामायण), बीच में च/ट/त-वर्ग आए तो 'न' (अर्चना)।
- ष : टवर्ग से पहले (कष्ट), ऋ के बाद (ऋषि); श : च, छ से पहले (निश्चल)।
- महत्त्व, तत्त्व, सत्त्व; उज्ज्वल, उच्छ्वास, चिह्न, ब्रह्मा, द्वंद्व।

अध्याय 3 : संधि

🧠 एक नज़र में

- **संधि** = सम् + धि (धा धातु + कि प्रत्यय) — अर्थ है **'मेल'** या **'जोड़'**।
- दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को **संधि** कहते हैं; संधि-युक्त पद को अलग करना **संधि-विच्छेद**।
- संधि के तीन भेद : **स्वर संधि**, **व्यंजन संधि**, **विसर्ग संधि**।
- स्वर संधि के पाँच भेद : **दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण, अयादि**।
- संधि मुख्यतः **संस्कृत तत्सम शब्दों** में होती है; हिंदी की अपनी कुछ संधियाँ भी हैं (यहाँ + ही = यहीं, तब + ही = तभी)।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

3.1 संधि : अर्थ, परिभाषा और संधि-समास में अंतर

'संधि' संस्कृत का शब्द है। दो शब्द या पद जब एक-दूसरे के पास आते हैं, तब उच्चारण की सुविधा के लिए पहले शब्द का **अंतिम वर्ण** और दूसरे शब्द का **प्रारंभिक वर्ण** मिल जाते हैं; इस मेल से जो **विकार** उत्पन्न होता है, उसे **संधि** कहते हैं। जैसे — विद्या + आलय = विद्यालय (आ + आ = आ)।

संधि-विच्छेद — संधि से बने शब्द को उसके मूल वर्णों में अलग करके मूल पदों को पुनः प्रकट करना : देवेंद्र = देव + इंद्र।

हिंदी में संधि द्वारा शब्द जोड़ने का सामान्य चलन नहीं है, पर संस्कृत से आए अनेक तत्सम शब्दों के कारण हिंदी व्याकरण में संस्कृत की संधियों और उनके नियमों को ग्रहण कर लिया गया है। शब्द-रचना में संधि उसी प्रकार सहायक है, जैसे उपसर्ग, प्रत्यय और समास।

⚠️ संधि और समास में अंतर

आधार	संधि	समास
मेल	**वर्णों** का मेल	**पदों (शब्दों)** का मेल
विभक्ति	विभक्ति का लोप नहीं होता	बीच की विभक्ति / योजक शब्द लुप्त होते हैं
विग्रह	संधि-विच्छेद : विद्या + आलय	समास-विग्रह : विद्या का आलय
विकार	वर्णों में परिवर्तन अनिवार्य	वर्ण-परिवर्तन आवश्यक नहीं (राजपुत्र)
भाषा	मुख्यतः तत्सम (संस्कृत) शब्दों में	तत्सम, तद्भव, देशज सभी में

याद रखें — **हर समास में संधि हो, यह आवश्यक नहीं**; और कई शब्दों में दोनों साथ होते हैं (विद्यालय = विद्या + आलय संधि; विद्या का आलय समास)।

3.2 स्वर संधि

दो **स्वरों** के मेल से होने वाले विकार को **स्वर संधि** कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं।

(1) दीर्घ संधि

सूत्र — अकः सवर्णे दीर्घः। यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ के बाद **वही (सवर्ण)** ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए, तो दोनों मिलकर **दीर्घ** हो जाते हैं।

मेल	परिणाम	उदाहरण
अ + अ / अ + आ / आ + अ / आ + आ	आ	अन्न + अभाव = अन्नाभाव; शिव + आलय = शिवालय; विद्या + अर्थी = विद्यार्थी; विद्या + आलय = विद्यालय; महा + आशय = महाशय; हिम + आलय = हिमालय; परम + अर्थ = परमार्थ; रत्न + आकर = रत्नाकर
इ + इ / इ + ई / ई + इ / ई + ई	ई	गिरि + इंद्र = गिरींद्र; गिरि + ईश = गिरीश; मही + इंद्र = महींद्र; पृथ्वी + ईश = पृथ्वीश; मुनि + इंद्र = मुनींद्र; परि + ईक्षा = परीक्षा; अभि + इष्ट = अभीष्ट
उ + उ / उ + ऊ / ऊ + उ / ऊ + ऊ	ऊ	भानु + उदय = भानूदय; लघु + ऊर्मि = लघूर्मि; वधू + उत्सव = वधूत्सव; भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व; अंबु + ऊर्मि = अंबूर्मि
ऋ + ऋ	ॠ	पितृ + ऋण = पितॄण (हिंदी में प्रयोग दुर्लभ)

(2) गुण संधि

सूत्र — आद्गुणः। यदि अ या आ के बाद इ/ई, उ/ऊ या ऋ आए, तो क्रमशः **ए, ओ, अर्** हो जाते हैं।

मेल	परिणाम	उदाहरण
अ/आ + इ/ई	ए	देव + इंद्र = देवेंद्र; देव + ईश = देवेश; महा + इंद्र = महेंद्र; रमा + ईश = रमेश; गण + ईश = गणेश; नर + इंद्र = नरेंद्र; सुर + इंद्र = सुरेंद्र; परम + ईश्वर = परमेश्वर
अ/आ + उ/ऊ	ओ	चंद्र + उदय = चंद्रोदय; सूर्य + उदय = सूर्योदय; महा + उत्सव = महोत्सव; समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि; गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि; पर + उपकार = परोपकार; हित + उपदेश = हितोपदेश; जल + ऊर्मि = जलोर्मि
अ/आ + ऋ	अर्	देव + ऋषि = देवर्षि; महा + ऋषि = महर्षि; सप्त + ऋषि = सप्तर्षि; राज + ऋषि = राजर्षि; ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 6
संस्कृत साहित्य

UPESSC का आधिकारिक पाठ्यक्रम (TGT हिंदी)

(क) संस्कृत के प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ – भास, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, दण्डी, श्रीहर्ष। (ख) सन्धि – स्वर एवं व्यंजन सन्धि, समास, शब्द रूप, धातु रूप, कारक प्रयोग। (ग) अनुवाद।

इस भाग में

- 1. संस्कृत साहित्य : एक परिचय
- 2. संस्कृत के प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ
- 3. संधि
- 4. समास
- 5. शब्दरूप
- 6. धातुरूप
- 7. कारक और उपपद विभक्ति
- 8. अनुवाद (हिंदी से संस्कृत)
- 9. त्वरित स्मरण सारणी

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

भाग 6 : संस्कृत साहित्य

1. संस्कृत साहित्य : एक परिचय

संस्कृत भारत की प्राचीनतम साहित्यिक भाषा है। इसके साहित्य को दो बड़े भागों में बाँटा जाता है : **वैदिक साहित्य** (वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद) और **लौकिक साहित्य** (रामायण-महाभारत से लेकर काव्य, नाटक, गद्य, कथा और शास्त्र)। TGT पाठ्यक्रम में लौकिक संस्कृत के सात प्रमुख रचनाकार रखे गए हैं : भास, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, दण्डी और श्रीहर्ष।

वर्ग	रचनाएँ	टिप्पणी
आदिकाव्य और इतिहास	रामायण (वाल्मीकि), महाभारत (वेदव्यास)	वाल्मीकि आदिकवि; महाभारत को 'पंचम वेद' भी कहा गया
लघुत्रयी	रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्	तीनों कालिदास की रचनाएँ
बृहत्त्रयी	किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्	क्रमशः भारवि, माघ, श्रीहर्ष
पंचमहाकाव्य	रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्	संस्कृत के पाँच श्रेष्ठ महाकाव्य

प्रसिद्ध सूक्ति (चारों कवियों की विशेषता)

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

- कालिदास की **उपमा**, भारवि का **अर्थ-गौरव**, दण्डी का **पद-लालित्य**; और माघ में ये **तीनों गुण** हैं।

2. संस्कृत के प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ

2.1 भास

- संस्कृत के सबसे प्राचीन उपलब्ध नाटककारों में; समय **कालिदास से पहले** माना जाता है। कालिदास ने 'मालविकाग्निमित्रम्' की प्रस्तावना में भास, सौमिल्ल और कविपुत्र को आदर से याद किया है।
- भास के नाटक लंबे समय तक अप्राप्त रहे। **टी. गणपति शास्त्री** ने 1909 ई. में केरल से इनकी पांडुलिपियाँ खोजीं और प्रकाशित कीं। ये **13 नाटक** '**भासनाटकचक्र**' कहलाते हैं।

आधार (कथा-स्रोत)	नाटक
रामायण	प्रतिमानाटकम्, अभिषेकनाटकम्
महाभारत	पञ्चरात्रम्, मध्यमव्यायोगः, दूतवाक्यम्, दूतघटोत्कचम्, कर्णभारम्, ऊरुभङ्गम्
कृष्ण-कथा	बालचरितम्
उदयन-कथा (लोककथा)	स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
कल्पित कथा	चारुदत्तम्, अविमारकम्

- **स्वप्नवासवदत्तम्** भास का सर्वश्रेष्ठ नाटक है (राजा उदयन और वासवदत्ता की कथा)। **ऊरुभङ्गम्** को संस्कृत का **दुःखांत** नाटक माना जाता है, क्योंकि इसमें दुर्योधन की मृत्यु मंच पर दिखाई गई है। 'चारुदत्तम्' के आधार पर बाद में शूद्रक ने 'मृच्छकटिकम्' लिखा।
- भास की विशेषताएँ : सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा, छोटे संवाद, अभिनेयता (मंच पर खेलने की क्षमता) और नाट्य-नियमों से कुछ स्वतंत्रता।

2.2 कालिदास

- संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि और नाटककार; **कविकुलगुरु** कहलाते हैं। समय पर मतभेद है; अधिकतर विद्वान इन्हें **गुप्तकाल** (चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समय) से जोड़ते हैं। उपमा-प्रयोग में अद्वितीय : **"उपमा कालिदासस्य"**।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

2.6 दण्डी

- समय लगभग **सातवीं शताब्दी**; कांची के पल्लव राजाओं से जुड़े। **"दण्डिनः पदलालित्यम्"** : पदों की कोमलता और लालित्य के लिए प्रसिद्ध।

रचना	विधा	मुख्य बातें
काव्यादर्श	काव्यशास्त्र	3 परिच्छेद; काव्य के गद्य-पद्य-मिश्र भेद; वैदर्भी और गौड़ मार्ग; 10 गुण; "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते"
दशकुमारचरितम्	गद्यकाव्य (कथा)	राजकुमार राजवाहन और उसके साथियों, कुल दस कुमारों की रोचक कथाएँ
अवन्तिसुन्दरीकथा	गद्यकथा	दण्डी की रचना मानी जाती है (आंशिक रूप में उपलब्ध)

2.7 श्रीहर्ष

- समय **बारहवीं शताब्दी**; कन्नौज के राजा **जयचंद (जयंतचंद्र)** के आश्रित। रचना : **नैषधीयचरितम्** (22 सर्ग), बृहत्त्रयी का तीसरा और सबसे क्लिष्ट महाकाव्य।
- कथा : निषध-नरेश **नल** और विदर्भ की राजकुमारी **दमयंती** का प्रेम, हंस द्वारा संदेश और स्वयंवर में विवाह।
- विशेषताएँ : पांडित्य और कल्पना की अधिकता; हर सर्ग के अंत में **'आनन्द'** शब्द। प्रशंसा में : **"नैषधं विद्वदौषधम्"** (नैषध विद्वानों के लिए औषधि है) और **"उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः"**। वेदांत ग्रंथ **'खंडनखंडखाद्य'** भी इन्हीं का है।

> **ध्यान रखें : श्रीहर्ष और हर्षवर्धन**
> - नैषधीयचरितम् के रचयिता **श्रीहर्ष** (12वीं सदी) हैं। सम्राट **हर्षवर्धन** (7वीं सदी) अलग हैं; उनके नाटक 'रत्नावली', 'प्रियदर्शिका' और 'नागानंद' हैं।

2.8 सात रचनाकार : एक नज़र में

रचनाकार	प्रमुख रचनाएँ	पहचान / उक्ति
भास	13 नाटक (स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिमानाटकम्, ऊरुभङ्गम् आदि)	भासनाटकचक्र; खोज : गणपति शास्त्री (1909)
कालिदास	तीन नाटक, दो महाकाव्य, दो गीतिकाव्य	उपमा कालिदासस्य; कविकुलगुरु; दीपशिखा कालिदास
भवभूति	महावीरचरितम्, मालतीमाधवम्, उत्तररामचरितम्	उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते; करुण रस
भारवि	किरातार्जुनीयम् (18 सर्ग)	भारवेरर्थगौरवम्; लक्ष्म्यंक; आतपत्र-भारवि
माघ	शिशुपालवधम् (20 सर्ग)	माघे सन्ति त्रयो गुणाः; श्र्यंक; घंटामाघ
दण्डी	काव्यादर्श, दशकुमारचरितम्	दण्डिनः पदलालित्यम्
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम् (22 सर्ग), खंडनखंडखाद्य	नैषधं विद्वदौषधम्; आनन्दांक

3. संधि

दो वर्णों के पास-पास आने से उनमें जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे **संधि** कहते हैं। पाणिनि के अनुसार : "परः संनिकर्षः संहिता"। संधि के तीन भेद हैं : **स्वर संधि (अच् संधि)**, **व्यंजन संधि (हल् संधि)** और **विसर्ग संधि**।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

3.1 स्वर संधि

संधि	सूत्र	नियम	उदाहरण
दीर्घ	अकः सवर्णे दीर्घः	अ/इ/उ/ऋ के बाद वही (सवर्ण) स्वर आए तो दोनों मिलकर दीर्घ	हिम + आलयः = हिमालयः; विद्या + आलयः = विद्यालयः; कवि + ईशः = कवीशः; गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
गुण	आद्गुणः	अ/आ के बाद इ/ई = ए; उ/ऊ = ओ; ऋ = अर्	गण + ईशः = गणेशः; महा + उत्सवः = महोत्सवः; महा + ऋषिः = महर्षिः
वृद्धि	वृद्धिरेचि	अ/आ के बाद ए/ऐ = ऐ; ओ/औ = औ	सदा + एव = सदैव; महा + औषधिः = महौषधिः
यण्	इको यणचि	इ/ई, उ/ऊ, ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो क्रमशः य्, व्, र्	इति + आदि = इत्यादि; सु + आगतम् = स्वागतम्; अनु + अयः = अन्वयः; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
अयादि	एचोऽयवायावः	ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर आए तो क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव्	ने + अनम् = नयनम्; नै + अकः = नायकः; पो + अनः = पवनः; पौ + अकः = पावकः
पूर्वरूप	एङः पदान्तादति	पद के अंत के ए/ओ के बाद 'अ' आए तो अ का पूर्वरूप (ऽ)	हरे + अव = हरेऽव; विष्णो + अव = विष्णोऽव

3.2 व्यंजन (हल्) संधि

संधि	सूत्र	नियम	उदाहरण
श्चुत्व	स्तोः श्चुना श्चुः	स् या तवर्ग का श् या चवर्ग से योग हो तो स् → श्, तवर्ग → चवर्ग	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति; सत् + चित् = सच्चित्
ष्टुत्व	ष्टुना ष्टुः	स् या तवर्ग का ष् या टवर्ग से योग हो तो स् → ष्, तवर्ग → टवर्ग	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः; तत् + टीका = तट्टीका
जश्त्व	झलां जशोऽन्ते	पद के अंत के झल् (वर्ग के 1-4 वर्ण आदि) को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण	वाक् + ईशः = वागीशः; जगत् + ईशः = जगदीशः; अच् + अन्तः = अजन्तः
अनुनासिक	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	पद के अंत के वर्ण के बाद अनुनासिक (ङ, ञ, ण, न, म) आए तो उसी वर्ग का पंचम वर्ण	वाक् + मयम् = वाङ्मयम्; जगत् + नाथः = जगन्नाथः
अनुस्वार	मोऽनुस्वारः	पद के अंत के म् के बाद व्यंजन आए तो म् → अनुस्वार	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
परसवर्ण	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार के बाद स्पर्श व्यंजन आए तो अनुस्वार उसी वर्ग का पंचम वर्ण	शां + तः = शान्तः; अं + कितः = अङ्कितः
छत्व	शश्छोऽटि	झय् के बाद श् आए और उसके बाद स्वर आदि हो तो श् → छ्	तत् + शिवः = तच्छिवः
लत्व	तोर्लि	तवर्ग के बाद ल् आए तो तवर्ग → ल्	तत् + लीनः = तल्लीनः; उत् + लेखः = उल्लेखः

3.3 विसर्ग संधि (संक्षेप में)

- **सत्व (विसर्जनीयस्य सः) :** विसर्ग के बाद त/थ आदि खर् वर्ण आए तो विसर्ग → स्। नमः + ते = **नमस्ते**।
- **उत्व :** 'अ' के बाद विसर्ग और आगे 'अ' या सघोष व्यंजन हो तो विसर्ग → उ, फिर गुण होकर 'ओ'। मनः + रथः = **मनोरथः**; शिवः + अर्च्यः = **शिवोऽर्च्यः**।
- **रुत्व :** इ/उ के बाद विसर्ग और आगे सघोष वर्ण हो तो विसर्ग → र्। निः + धनः = **निर्धनः**; दुः + जनः = **दुर्जनः**।
- **रेफ-लोप (रो रि) :** र् के बाद र् आए तो पहले र् का लोप और पूर्व स्वर दीर्घ। पुनः + रमते = **पुना रमते**; निः + रोगः = **नीरोगः**।

4. समास

दो या अधिक पदों का विभक्ति आदि हटाकर एक पद बन जाना **समास** है ("समसनं समासः")। समास से बने पद को **समस्त पद** और उसे तोड़कर लिखने को **विग्रह** कहते हैं। संस्कृत में समास के छह मुख्य भेद हैं।

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

मॉक टेस्ट : 100 प्रश्न (UP TGT हिंदी)

पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित अभ्यास प्रश्न-पत्र : कथन, सुमेलन और अभिकथन-कारण वाले प्रश्नों सहित

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

- कुल प्रश्न : **100** | सुझाया गया समय : **2 घंटे** | प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्पों में से केवल एक सही है।
- लगभग **70% प्रश्न कठिन स्तर** (कथन-आधारित, सुमेलन, अभिकथन-कारण) और **30% प्रश्न सरल स्तर** के हैं।
- पहले पूरा प्रश्न-पत्र बिना देखे हल कीजिए, फिर अंत में दी गई **उत्तरमाला और व्याख्या** से मिलाइए।
- स्व-मूल्यांकन के लिए : 70+ सही = उत्कृष्ट, 55–69 = अच्छा, 55 से कम = संबंधित भाग फिर से दोहराइए।

खंड	विषय	प्रश्न
क	हिंदी साहित्य का इतिहास	1–25
ख	हिंदी गद्य साहित्य	26–41
ग	काव्य के भेद (रस, छंद, अलंकार, गुण, दोष)	42–56
घ	भाषा	57–67
ङ	व्याकरण	68–89
च	संस्कृत साहित्य	90–100

प्रश्न-पत्र

खंड-क : हिंदी साहित्य का इतिहास

प्रश्न 1. सूची-I (रासो ग्रंथ) को सूची-II (रचनाकार) से सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) पृथ्वीराज रासो	(1) नरपति नाल्ह
(B) बीसलदेव रासो	(2) चंदबरदाई
(C) परमाल रासो	(3) जगनिक
(D) खुमाण रासो	(4) दलपति विजय

कूट :

(क) A-2, B-1, C-3, D-4
(ख) A-1, B-2, C-3, D-4
(ग) A-2, B-1, C-4, D-3
(घ) A-3, B-1, C-2, D-4

प्रश्न 2. आदिकाल के नामकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'वीरगाथा काल' कहा।
II. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'आदिकाल' नाम उचित माना।
III. रामकुमार वर्मा ने इसे 'संधिकाल एवं चारणकाल' कहा।
IV. ग्रियर्सन ने इसे 'सिद्ध-सामंत युग' कहा।

सही कथन चुनिए :

(क) केवल I, II और III
(ख) केवल I, II और IV
(ग) केवल II, III और IV
(घ) I, II, III और IV

डेमो प्रति (नमूना पृष्ठ) • पूरी ई-बुक : store.hindisahity.com

प्रश्न 3. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए :

अभिकथन (A) : अमीर खुसरो को खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक कवि माना जाता है।

कारण (R) : उन्होंने पहेलियाँ और मुकरियाँ खड़ी बोली में रचीं।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है

(ख) A और R दोनों सही हैं, पर R, A की सही व्याख्या नहीं है

(ग) A सही है, R गलत है

(घ) A गलत है, R सही है

प्रश्न 4. 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' के रचयिता कौन हैं?

(क) अब्दुर्रहमान

(ख) स्वयंभू

(ग) विद्यापति

(घ) हेमचंद्र

प्रश्न 5. राहुल सांकृत्यायन ने हिंदी का प्रथम कवि किसे माना है?

(क) पुष्य

(ख) स्वयंभू

(ग) गोरखनाथ

(घ) सरहपा

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित **नहीं** है?

(क) सरहपा – दोहाकोश

(ख) हेमचंद्र – कीर्तिपताका

(ग) अब्दुर्रहमान – संदेश रासक

(घ) स्वयंभू – पउमचरिउ

प्रश्न 7. सूची-I (संप्रदाय) को सूची-II (प्रवर्तक) से सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) पुष्टिमार्ग	(1) हितहरिवंश
(B) राधावल्लभ संप्रदाय	(2) वल्लभाचार्य
(C) सखी (हरिदासी) संप्रदाय	(3) चैतन्य महाप्रभु
(D) गौड़ीय संप्रदाय	(4) स्वामी हरिदास

कूट :

(क) A-2, B-1, C-4, D-3

(ख) A-2, B-4, C-1, D-3

(ग) A-1, B-2, C-4, D-3

(घ) A-3, B-1, C-4, D-2

प्रश्न 8. तुलसीदास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. 'विनयपत्रिका' ब्रजभाषा में रची गई है।

II. 'कवितावली' अवधी में रची गई है।

III. 'बरवै रामायण' बरवै छंद में है।

IV. 'रामचरितमानस' की भाषा अवधी है।

सही कथन चुनिए :

(क) केवल I और II

(ख) केवल I, III और IV

(ग) केवल II, III और IV

(घ) I, II, III और IV

यह केवल डेमो प्रति है

पूरी ई-बुक में आगे क्या है?

UP TGT हिंदी : संपूर्ण कोर्स • संक्षिप्त नोट्स (428 पृष्ठ)



- **भाग 1** : हिंदी साहित्य का इतिहास — आदिकाल से आधुनिक काल तक (40 अध्याय)
- **भाग 2** : हिंदी गद्य साहित्य — कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना, लघु विधाएँ
- **भाग 3** : काव्य के भेद — रस, छंद, अलंकार, गुण, दोष (उदाहरण और व्याख्या सहित)
- **भाग 4** : भाषा • **भाग 5** : संपूर्ण व्याकरण (6 खंड, 30 अध्याय)
- **भाग 6** : संस्कृत साहित्य — रचनाकार, संधि, समास, शब्दरूप, धातुरूप, अनुवाद
- **100 प्रश्नों का मॉक टेस्ट** — उत्तरमाला और हर प्रश्न की व्याख्या सहित

पूरी ई-बुक प्राप्त करें → store.hindisahity.com

किसी भी सहायता के लिए WhatsApp : **9680260474**

हिंदी साहित्य चैनल के अन्य नोट्स

ई-बुक पढ़ने के लिए धन्यवाद! तैयारी के लिए ये सामग्री भी देखिए

हिंदी साहित्य का इतिहास : संपूर्ण नोट्स

- आदिकाल संपूर्ण नोट्स
- भक्तिकाल संपूर्ण नोट्स
- रीतिकाल संपूर्ण नोट्स
- आधुनिक काल संपूर्ण नोट्स
- गद्य विधाएँ संपूर्ण नोट्स

MCQ प्रश्नोत्तरी (उत्तर व्याख्या सहित)

- आदिकाल प्रश्नोत्तरी (700+ MCQ)
- भक्तिकाल प्रश्नोत्तरी (1000+ MCQ)
- रीतिकाल प्रश्नोत्तरी (750+ MCQ)
- आधुनिक काल प्रश्नोत्तरी (2500+ MCQ)
- भारतीय काव्यशास्त्र (850+ MCQ)
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र (700+ MCQ)

UGC NET/JRF हिंदी विशेष

- पेपर 2 कंप्लीट कॉम्बो नोट्स (सभी 10 इकाइयाँ)
- टेस्ट सीरीज़ : 33 टेस्ट पेपर, 1500+ प्रश्न

आपकी परीक्षा के अनुसार कस्टम नोट्स — ऑर्डर पर तैयार

हमारी टीम RPSC, TGT, PGT, UPSC, NET/JRF सहित किसी भी परीक्षा के लिए आपके पाठ्यक्रम के अनुसार विशेष नोट्स ऑर्डर पर तैयार करती है (सशुल्क सेवा)।

WhatsApp : 9680260474

hindisahity.com store.hindisahity.com YouTube : Hindi Sahitya Channel Telegram

© सर्वाधिकार सुरक्षित · लेखक : केवल कृष्ण घोड़ेला · हिंदी साहित्य चैनल, श्रीगंगानगर (राजस्थान)